केवल आप के लिये
गांव–गांव शहर–शहर देश दुनियां में अपनों तक पहुंचाना है तो :भारतीय बस्ती दैनिक वेब www.bhartiyabasti.com और उसका छपा संस्करण सबसे बेहतर माध्यम
सम्पर्क-bhartiyabasti@gmail.com
मो0 9450567450| 9336715406

दैनिक
भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती
www.bhartiyabasti.com के लिये विज्ञापन बुक कराये। विचार, प्रचार का सशक्त माध्यम सम्पर्क
मो0 9450567450
9336715406
भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 2रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :45 अंक 311 मंगलवार 4 जून 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या–फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

एक नजर

अधिवक्ता की गर्मी में तबियत बिगड़ने से मौत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

विकमजोत (बस्ती)। परसुरामपुर थानाक्षेत्र के ग्राम रघवापुर निवासी राम मनोहर (53) पुत्र स्व. निर्भोचन यादव अचानक मौत हो गई। परिजनों के अनुसार वह गर्मी के चलते बीमार हुए और मौत हो गई। राम मनोहर तहसील हर्रैया में अधिवक्ता का कार्य करते थे। परिजनों के मुताबिक शनिवार को तहसील से आने के बाद अचानक तबियत बिगड़ी।

परिजनों ने श्रृंगीनारी में एक निजी चिकित्सक से उपचार कराया। उपचार के दौरान तबियत और बिगड़ती देख परिजनों ने मेडिकल कॉलेज दर्शननगर अयोध्या ले गए। रात 11 बजे उपचार के दौरान वकील राम मनोहर की मौत हो गयी। मृतक वकील राम मनोहर की पत्नी प्रेम देवी का रो–रो कर बहुत बुरा हाल है। चार बच्चों में से एक बेटी ममता यादव की शादी हुई है। तीन बच्चे 25 वर्षीय पुत्री सविता यादव, 24 वर्षीय पुत्री प्रिया यादव और 21 वर्षीय पुत्र रोहित यादव के सिर से पिता का साया छिन गया।

मायके में लटकता मिला विवाहिता का शव

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। पुरानी बस्ती थानाक्षेत्र के ग्राम पंचायत सिहारी के पुरवा बन्नी में रविवार की सुबह एक विवाहिता का शव मायके में क्षत की कुण्डे से लटकता मिला। परिजनों ने इसकी सूचना पुरानी बस्ती पुलिस को फोन से दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को नीचे उतारा और पोस्टमार्टम को भेजा।

बन्नी निवासिनी रागिनी (21) पुत्री मनोज कुमार का शव अपने मायके में घर के क्षत के कुंडे से लटकता मिला। रागिनी की शादी पिछले 25 अप्रैल को हुई हैं। विवाह के बाद से वह ससुराल में रह रही थी। 25 मई को लोकसभा के चुनाव में मतदान करने ससुराल से 24 मई को मायके बन्नी आई थी। वह फंदे से क्यों लटक गई, इसका पता नहीं चल पाया है। मौके पर पहुंचे थानाध्यक्ष महेश सिंह, चौकी प्रभारी आशुतोष शुक्ला व अन्य पुलिस कर्मियों ने आवश्यक कार्रवाई की।

गर्मी में अस्थायी टिकट काउन्टर बना यात्रियों के लिये मुसीबत

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। रेलवे स्टेशन परिसर में बनाया गया अस्थायी टिकट काउंटर यात्रियों को इस भीषण गर्मी में पसीने–पसीने कर रहा है। दिन के समय इस टिन शेड के नीचे कुछ मिनट के लिए भी ठहरना मुश्किल हो जा रहा है।

सबसे बुरा हाल महिलाओं, बुजुर्गों व बच्चों का हो रहा है। यात्रियों का कहना है कि टिन शेड में जो पंखे लगाए गए हैं, उनसे गर्म हवा आती है। अगर यहां कूलर का प्रबंध कराया जाए तो काफी राहत हो सकती है। रेलवे स्टेशन के मुख्य भवन में बने टिकट काउंटर व रिजर्वेशन काउंटर को नए सिरे से बनाने के लिए स्टेशन परिसर में अस्थायी टिनशेड बनाया गया है, इसी में दो टिकट व दो रिजर्वेशन काउंटर बनाया गया है। पुराने भवन को तोड़कर मरम्मत कराई जा रही है। रेलवे प्रबंधन का उस समय कहना था कि फरवरी तक काम पूरा करा लिया जाएगा, लेकिन काम समय से पूरा न होने के कारण यात्रियों को टिन शेड में गर्मी झेलनी पड़ रही है।

अगर तापमान बढ़ने का यही हाल रहा तो टिकट काउंटर की लाइन में खड़े होने वाले यात्रियों को गर्मी व उमस गंभीर रूप से बीमार कर सकती है।

हम कभी लापता नहीं थे, लोकतंत्र में जीत, हार जरूरी– चुनाव आयुक्त

नई दिल्ली (आभा)। निर्वाचन आयोग ने लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजों से एक दिन पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस करके सात चरणों की चुनाव प्रक्रिया के बारे में बात की. मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने कहा कि सोशल मीडिया पर आपको 'लापता जेंटलमैन वापस आ गए' मीम्स दिख जाएंगे. लेकिन हम बताना चाहते हैं कि हम कभी 'लापता' नहीं थे. हमने 4 डे की बात की थी. भारत में 642 मिलियन मतदाता हैं. यह संख्या विश्व के 27 देशों के वोटर्स से पांच गुना ज्यादा है. चुनाव आयोग ने कहा कि इस चुनाव में 64 करोड़ से अधिक लोगों ने मतदान किया. हमने इस चुनाव में विश्व रिकॉर्ड बनाया है।

मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने कहा कि हम भारत के मतदाताओं को स्टैंडिंग ओवेशन देते हैं, हमने बुजुर्गों के घर जाकर उनका वोट लिया है. 85 वर्ष से ऊपर के उम्र वाले मतदाताओं ने घर बैठे वोट दिया. 1.5 करोड़ मतदान और सुरक्षा कर्मियों की आवाजाही के लिए 135 विशेष ट्रेनों, 4 लाख वाहनों और 1692 फ्लाट्स का इस्तेमाल किया गया. 68763 मॉनिटरिंग टीमें चुनाव की निगरानी में लगी थीं. भारतीय चुनाव की सफलता का विस्तार से जिक्र करते हुए सीईसी राजीव कुमार ने सबका धन्यवाद किया. उन्होंने कहा कि बड़े ब्रैंड से लेकर स्टार्टअप तक, सभी ने स्वेच्छा से योगदान किया।

मतदान कर्मियों के सामने आने वाली कठिनाओं का जिक्र करते हुए मुख्य चुनाव आयुक्त ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान एक वीडियो दिखाया. फिर उन्होंने कहा, मतदान कर्मी कितनी मुश्किलों का सामना करके वोट कराने जाते हैं. जब उनकी निष्ठा पर सवाल उठाए जाते हैं, तो सोचिए उनके दिल पर क्या गुजरती होगी. उन्होंने कहा कि जम्मू–कश्मीर में 4 दशक में सर्वाधिक मतदान दर्ज हुआ. घाटी में 58.58: और जम्मू में 51.05: वोटिंग हुई. हमने इसी बुनियाद पर आगे विधानसभा चुनाव कराना तय किया है. उन्होंने कहा कि मणिपुर में भी सफलता की कहानी लिखी गई. सीईसी राजीव कुमार ने चुनाव ड्यूटी में लगे कर्मचारियों के लिए शायरी पढ़ी– 'गुलशन की खूबसूरती फूलों से है माली की बात कौन करता है, लोकतंत्र में जीत–हार जरूरी है तुम्हारी बात कौन करता है।

मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा, आपको याद होगा कि पहले चुनावों को प्रभावित करने के लिए पैसे और सामान का वितरण होता था. इस बार न कहीं साड़ी बंटी, न कुकर।

मतगणना की तैयारी पूरी नहीं ले जा सकेंगे मोबाइल

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। लोकसभा सामान्य निर्वाचन के अन्तर्गत 61–संसदीय क्षेत्र की मतगणना दिनॉक 4 जून 2024 को निष्पक्ष, पारदर्शी एवं शान्तिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने के लिए अपर पुलिस महानिदेशक गोरखपुर जोन के.एस. प्रताप की अध्यक्षता में स्ट्रांग रूम नवीन मंडी परिसर में बैठक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मण्डलायुक्त अखिलेश सिंह, पुलिस महानिरीक्षक रामकृष्ण भारद्वाज, जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी अन्द्रा वामसी व पुलिस अधीक्षक गोपाल कृष्ण चौधरी मौजूद रहें।

उन्होने स्ट्रांग रूम नवीन मंडी स्थल बस्ती में होने वाले मतगणना ड्यूटी में लगे अधिकारी/कर्मचारीगण को आवश्यक दिशा–निर्देश देते हुए ब्रीफ किया। इस अवसर पर सीडीओ जयदेव सीएस, एडीएम कमलेश चन्द्र, अपर पुलिस अधीक्षक ओम प्रकाश सिंह, समस्त क्षेत्राधिकारीगण व अन्य पुलिस अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

इसी कड़ी में जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी अंद्रा वामसी ने मतगणना के सम्बन्ध में सभी उम्मीदवारों और उनके एजेंट्स के साथ कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक की गई और आयोग के निर्देश व जनपद स्तर पर की गई व्यवस्था से अवगत कराया गया।

उन्होने बताया है कि मतगणना स्थल पर आने वाले काउंटिंग एजेंट की एंट्री गेट नंबर 2 से होगी व वाहन पार्किंग चिन्हित किए गए स्थान पर मतगणना स्थल से 100 मीटर दूर पार्क किया जाएगा तथा कर्मचारियों की एंट्री गेट नंबर 3 से होगी व वाहन पार्किंग फल मंडी गेट नंबर 3 पर होगी। इसके साथ ही मतगणना स्थल मोबाइल फोन ले जाना प्रतिबंधित रहेगा। बैठक में पुलिस अधीक्षक गोपाल कृष्ण चौधरी, सीडीओ जयदेव सीएस, एडीएम कमलेश चन्द्र, समस्त उप जिलाधिकारी, सहायक निर्वाचन अधिकारी सहित संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

एग्जिट पोल में हार रहे हैं कई दिग्गज नेता और उनके बेटे

लखनऊ (आभा)। यूपी में एक ऐसा भी एग्जिट पोल आया है जिसमें यहां की सभी सीटों का ब्योरा दिया गया है। बताया गया है कि किस सीट पर कौन सी पार्टी जीत या हार रही है। इस सर्वे में भले ही भाजपा नेतृत्व वाले एनडीए को 62 और सपा–कांग्रेस वाले इंडिया गठबंधन को केवल 18 सीटें दी गई हैं इसके बाद भी एनडीए के कई दिग्गज और उनके टिकट पर उतरे नेताओं के बेटे हार रहे हैं। यहीं नहीं सपा के कद्दावर नेताओं रामगोपाल यादव और शिवपाल यादव के बेटे के भी हारने की संभावना जताई गई है। भाजपा की तरफ से हारने वालों में सबसे बड़ा चेहरा स्मृति ईरानी का बताया जा रहा है। अमेठी से उतरी स्मृति ईरानी पिछली बार राहुल गांधी को हराकर सांसद बनी थीं। इस बार स्मृति को कांग्रेस के केएल शर्मा से हार की आशंका जताई गई है।

स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स एजेंसी ने देश की हर सीट का एग्जिट पोल जारी किया है। उनका दावा किया है कि उसके सर्वे में 20 लाख वोटरों को शामिल किया गया था। यूपी की सभी 80 सीटों एजेंसी ने अपना आकलन दिया है। एजेंसी के अनुसार अमेठी में केंद्रीय मंत्री और भाजपा की प्रत्याशी स्मृति ईरानी कांग्रेस के केएल शर्मा से हार रही हैं। एनडीए के ही सहयोगी और निषाद पार्टी के अध्यक्ष संजय निषाद के सांसद बेटे प्रवीण राजभर इस बार फिर संतकबीरनगर लोकसभा सीट से उतरे हैं। उनके हारने की संभावना जताई गई है। एनडीए के एक और सहयोगी सुभासपा प्रमुख ओपी राजभर के बेटे अरविंद राजभर के भी घोसी से हारने की संभावना जताई गई है। दोनों सीटों पर सपा के जीतने की संभावना है।

हाईप्रोफाइल आजमगढ़ लोकसभा सीट पर इस बार भोजपुरी स्टार और भाजपा के सांसद दिनेश लाल यादव निरहुआ के हारने और सपा प्रत्याशी धर्मेंद्र यादव के जीतने के आसार हैं। मधोही सीट पर इंडिया गठबंधन से उतरे टीएमसी के प्रत्याशी यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री कमलापति त्रिपाठी के प्रपौत्र ललितेश पति त्रिपाठी भी हार रहे हैं। जौनपुर की दोनों सीटों पर धनंजय सिंह का जादू नहीं चला है। जबकि प्रतापगढ़ और कौशांबी दोनों पर राजा भैया का दबदबा दिखाई दिया है। धनंजय ने भाजपा को समर्थन का ऐलान किया था। इसके बाद भी भाजपा जौनपुर और वहीं की मछलीशहर लोकसभा सीट हार रही है। इसके उलट राजा भैया के प्रभाव वाली कौशांबी और प्रतापगढ़ सीटें सपा जीत रही है। राज भैया ने अपनी तरफ से किसी को समर्थन देने का ऐलान तो नहीं किया था लेकिन उनकी पार्टी के नेताओं ने सपा को समर्थन की घोषणा की थी।

अपने बयानों को लेकर पिछले कुछ समय से चर्चा में रहने वाले स्वामी प्रसाद मौर्य कुशीनगर से हार रहे हैं। गोरखपुर से सटी बस्ती की सीट सपा इस बार भाजपा से छीन रही है। रामप्रसाद चौधरी भाजपा के हरीश द्विवेदी से जीत रहे हैं। अंबेडकर नगर लोकसभा सीट पर मौजूदा सांसद रितेश पांडेय का बसपा से भाजपा में आना सही फैसला नहीं साबित हुआ है। इस सर्वे की मानें तो भाजपा के रितेश पांडेय को लालजी वर्मा हरा रहे हैं।भाजपा को बड़ा झटका फैजाबाद लोकसभा सीट पर लगने की आशंका जताई गई है। अयोध्या इसी फैजाबाद लोकसभा सीट है। पहले अयोध्या जिले का नाम फैजाबाद ही था। यह सीट भाजपा के हाथ से निकलने की आशंका जताई गई है।

मतगणना केंद्रों पर भीड़ बुलाने वालों पर रहेगी कड़ी नजरः डीजीपी ने दिया चेतावनी

लखनऊ (आभा)। उत्तर प्रदेश के कार्यवाहक पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) प्रशांत कुमार ने सोमवार को कहा कि उनके पास इस बात के सबूत हैं कि कुछ लोग चार जून को लोगों से बड़ी संख्या में मतगणना केंद्रों पर पहुंचने के लिए कह रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। अपर मुख्य सचिव (गृह) दीपक कुमार के साथ एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए डीजीपी कुमार ने कहा कि हमारे पास सबूत हैं कि कुछ लोग, लोगों से बड़ी संख्या में मतगणना केंद्रों पर पहुंचने की अपील कर रहे हैं। उनसे सख्ती से निपटा जाएगा और कानून–व्यवस्था को बिगाड़ने की कोशिश करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

कुमार ने कहा कि हमारे पास ऐसे लोगों के नाम भी हैं और इसे सही समय पर साझा किया जाएगा। उन्होंने कहा कि 2022 के विधानसभा चुनाव से पहले भी कुछ लोगों ने समस्या पैदा करने की कोशिश की थी, लेकिन सभी जानते हैं कि तब ऐसे तत्वों के खिलाफ क्या कार्रवाई की गई थी।

उन्होंने कहा कि हम सभी पहलुओं पर नजर रख रहे हैं। स्थानीय खुफिया इकाइयां काम कर रही हैं। किसी भी अफवाह को फैलने से रोकने के लिए सोशल मीडिया पर नजर रखी जा रही है। अपर मुख्य सचिव (गृह) कुमार ने कहा कि 75 जिलों में 81 मतगणना केंद्रों पर मतगणना होगी और इसके लिए व्यापक सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

ज्ञात रहे कि लोकसभा की 80 सीट के लिए राज्य में सात चरणों में मतदान हुआ है। इन सीट पर कुल 851 उम्मीदवार मैदान में थे, जिनमें 771 पुरुष और 80 महिलाएं थीं। सबसे ज्यादा 28 उम्मीदवार घोसी लोकसभा क्षेत्र में और सबसे कम चार प्रत्याशी कैसरगंज लोकसभा क्षेत्र में थे।

सपा जिलाध्यक्ष महेन्द्रनाथ यादव का दावाः मतगणना स्थल से जीत का प्रमाण–पत्र लेकर लौटेंगे समाजवादी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। सोमवार को समाजवादी पार्टी जिलाध्यक्ष एवं बस्ती सदर विधायक महेन्द्रनाथ यादव ने पार्टी कार्यालय पर पत्रकारों के साथ वार्ता में दावा किया कि 4 जून को बस्ती लोकसभा से इण्डिया गठबंधन के प्रत्याशी राम प्रसाद चौधरी विजेता होंगे और जीत का प्रमाण–पत्र लेकर मतगणना स्थल से लौटेंगे।

मतगणना से एक दिन पूर्व पत्रकारों के साथ वार्ता में सपा जिलाध्यक्ष महेन्द्रनाथ यादव ने कहा कि मतदान के बाद बूथवार समीक्षा के बाद जो निष्कर्ष निकला है उसमें सपा प्रत्याशी की जीत तंय है और इस बार जनादेश राम प्रसाद चौधरी के पक्ष में होगा।

पत्रकारों के प्रश्नों का उत्तर देते हुये महेन्द्रनाथ यादव ने कहा कि मतगणना में जिन कार्यकर्ताओं की ड्यिूटी लगायी गई है उन्हें निर्देश दिया गया है कि वे आखिरी मत की गिनती तक पूरी निष्ठा से डटें रहे। यदि चुनाव में किसी प्रकार की धांधली का प्रयास हुआ तो समाजवादी चुप नहीं बैठेंगे।

प्रेस वार्ता में मुख्य रूप से सपा विधायक राजेन्द्र प्रसाद चौधरी, कविन्द्र चौधरी 'अतुल', पूर्व विधायक राजमणि पाण्डेय, समाजवादी चिन्तक चन्द्रभूषण मिश्र, त्रयम्बक पाठक, दयाशंकर मिश्र, मो. स्वालेह, जावेद पिण्डारी, राम सिंह यादव, अरविन्द सोनकर, देवेन्द्र श्रीवास्तव, कक्कू शुक्ला के साथ ही सपा के अनेक कार्यकर्ता पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मतगणना स्थल के निकट निष्पक्ष जनादेश के लिये मौजूद रहेंगे भाकियू पदाधिकारी, कार्यकर्ता- दिवान चन्द पटेल

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मतगणना के दौरान गणना स्थल से निर्धारित दूरी पर भारतीय किसान यूनियन के पदाधिकारी, कार्यकर्ता मौजूद रहेंगे जिससे निष्पक्ष रूप से मतगणना हो और कोई मनमानी न होने पाये। भाकियू के प्रदेश सचिव एवं सहकारी गन्ना विकास समिति लिमिटेड मुण्डेरवा के निर्वतमान अध्यक्ष दिवान चन्द पटेल ने प्रेस को जारी विज्ञप्ति के माध्यम से बताया कि उन्हें पूरा भरोसा है कि जिला निर्वाचन अधिकारी चुनाव आयोग के दिशा निर्देश के अनुरूप

मतगणना का कार्य पूरा करायेंगे। यदि इस प्रक्रिया में किसी ने बाधा उत्पन्न किया तो भाकियू चुप नहीं बैठेगी और नियमानुसार लोकतांत्रिक तरीके से कड़ा प्रतिवाद करेगी।

भाकियू नेता दिवान चन्द पटेल ने कहा कि जिस प्रकार से शांतिपूर्ण वातावरण में मतदान हुआ उसी प्रकार से मतगणना हो इस दिशा में भाकियू का सहयोग बना रहेगा जिससे स्वस्थ लोकतंत्र के लिये निष्पक्ष परिणाम सामने आये। बताया कि भाकियू के 14 ब्लाकों, तहसीलों और जिले के पदाधिकारी, कार्यकर्ता मतगणना स्थल से निर्धारित दूरी पर रहेंगे जिससे उन्हें पल–पल के परिणामों की खबर मिल सके। वे अपनी नजर बनाये रखेंगे।

आखिरी मत की गिनती तक डटे रहें मतगणना में लगे भाजपा कार्यकर्ता–हरीश द्विवेदी

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर भाजपा के सांसद जिलाध्यक्ष ने पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं के साथ बैठक कर उन्हें टिप्स दिए। उन्होंने मतगणना में लगें एजेंटों से कहा कि अंतिम राउंड तक पैनी निगाह रखें। एग्जिट पोल में भाजपा की जीत बताई जा रही है। तीसरी बार फिर से नरेंद्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बनेंगे। देश में रिकार्ड सीटों से फिर से एनडीए की सरकार बनेगी। बताते चले कि भाजपा ने अटल बिहारी वाजपेयी प्रेक्षागृह में भाजपा के पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। जिसमें सांसद हरीश द्विवेदी ने कहा कि 4 जून को मतगणना होनी है। जिस पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं को जो जिम्मेदारी सौंपी गई है, वह उसे पूरा करें। मतगणना को लेकर सभी सजग रहे, अति उत्साहित न हो।

ध्यान रखें कि काउंटिंग में किसी भी तरह का विवधान न हो। अंतिम राउंड तक मतगणना अभिकर्ता मतगणना स्थल पर रहें और पैनी निगाह रखें।

जिलाध्यक्ष विवेकानन्द मिश्र ने कहा कि देश के तीसरी बार नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं। एग्जिट पोल से भी इसकी जानकारी मिल रही है। भाजपा रिकार्ट वोटों से इस लोकसभा चुनाव में जीत हासिल करेंगी।

पूर्व जिलाध्यक्ष पवन कसौधन व लोकसभा संयोजक केडी चौधरी सभी ने मतगणना अभिकर्ताओं का मार्गदर्शन किया।

इस मौके पर यशकांत सिंह, प्रमोद पाण्डेय, अनूप खरे, अनिल दुबे, अरविन्द पाल, राना दिनेश प्रताप सिंह, जगदीश शुक्ल, राधेश्याम कमलापुरी, गिल्लम चौधरी, बाल कृष्ण त्रिपाठी, अमृत कुमार वर्मा, विशाल श्रीवास्तव, सच्चिदानंद पाण्डेय, पंकज श्रीवास्तव, आशीष शुक्ल आदि मौजूद रहे।

मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने, हरीश द्विवेदी की जीत के लिये विश्व हिन्दू महासंघ ने किया यज्ञ, हवन

–भारतीय बस्ती संवाददाता–

बस्ती। मतगणना से पूर्व सोमवार को विश्व हिन्दू महासंघ जिलाध्यक्ष अखिलेश सिंह के संयोजन में पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं ने विधि विधान से कड़र शिव मंदिर पर हवन, यज्ञ प्रार्थना कर नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने और बस्ती के सांसद हरीश द्विवेदी के तीसरी बार विजय की कामना किया।

प्रेस को जारी विज्ञप्ति के माध्यम से विश्व हिन्दू महासंघ जिलाध्यक्ष अखिलेश सिंह ने कहा कि चुनाव पूर्व अनुमानों में भारतीय जनता पार्टी और एनडीए की तीसरी बार भारी बहुमत की सरकार बन रही है। निश्चित रूप से चुनाव परिणाम भाजपा गठबंधन के पक्ष में आयेंगे और नरेन्द्र मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनकर देश की जनता की आकांक्षाओं को पूरा करेंगे।

हवन यज्ञ और कड़र शिव

मंदिर पर पूजा पाठ करने वालों में मुख्य रूप से प्रदेश मंत्री दिग्विजय सिंह राना, जिला पंचायत सदस्य अमृता सिंह, बाबा जयप्रकाश दास, राजकुमार उर्फ मंटू चौधरी, आशीष उर्फ कल्लू बाबा, हरिश्चन्द्र पटेल, सौरभ त्रिपाठी, संतोष अग्रहरि, अमरदीप श्रीवास्तव, बद्री प्रसाद पाण्डेय, किशन गुप्ता, वेद प्रकाश त्रिपाठी, मनीष पाण्डेय, राजेश गुप्ता, प्रवीण आहूजा, यश गुप्ता, राकेश सिंह, अमरजीत सिंह, बृजनन्दन त्रिपाठी, जमुना प्रसाद, दीपक गुप्ता मोहंटी गुप्ता के साथ ही विश्व हिन्दू महासंघ के अनेक पदाधिकारी उपस्थित रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"–वेडेल फिलिप्स

दैनिक भारतीय बस्ती

बस्ती 4 जून 2024 मंगलवार

सम्पादकीय

चुनाव परिणामों का इंतजार

मतदान का लंबा सफर खत्म होने के बाद अब मतगणना की शुरुआत हो चली है। एक ओर, जहां एग्जिट पोल की चर्चा तेज है वहीं दूसरी ओर, दो राज्यों– अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम विधानसभा चुनाव के नतीजे भी आ गए हैं। अरुणाचल प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी ने फिर से जीत दर्ज की है, तो वहीं सिक्किम में मजबूत क्षेत्रीय दल सिक्किम क्रांतिकारी मोरचा अर्थात एसकेएम ने लगातार दूसरी बार बड़ी जीत दर्ज की है। इन दोनों राज्यों में लोकसभा सीटों के लिए वोटों की गिनती 4 जून को होगी, मगर इनमें विधानसभा चुनावों के लिए वोटों की गिनती पहले कर दी गई है, क्योंकि वर्तमान विधानसभा का कार्यकाल 2 जून को समाप्त हो रहा था। एक खास बात यह भी है कि अरुणाचल प्रदेश के 60 विधानसभा क्षेत्रों में से दस में मतदान की जरूरत नहीं पड़ी थी। मुख्यमंत्री पेमा खांडू और उनके डिप्टी चोवा मीन सहित 10 सत्तारूढ़ उम्मीदवारों ने अपनी–अपनी सीट निर्विरोध जीत ली थी। यह एक संकेत है कि दो बार सत्ता में रहने के बावजूद अरुणाचल प्रदेश में भाजपा नेताओं की लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई है। दूसरी ओर, विपक्ष बहुत मामूली सीटों के साथ अपनी साख बचाने की कोशिश करता नजर आ रहा है।

वैसे अरुणाचल में भाजपा जितनी मजबूत है, उससे कहीं ज्यादा मजबूत सिक्किम में एसकेएम है। इस क्षेत्रीय दल ने विपक्ष का लगभग सफाया कर दिया है। सिक्किम में कांग्रेस या भाजपा के लिए कोई आधार नहीं बचा है, वहां विपक्षी दलों को अपनी यात्रा शून्य से शुरू करनी पड़ेगी। राज्य में सिक्किम क्रांतिकारी मोरचा की लोकप्रियता का अध्ययन होना चाहिए। आमतौर पर क्षेत्रीय दल एक चुनाव जीतने के बाद दूसरा चुनाव बुरी तरह हार जाते हैं, पर सिक्किम में सत्तारूढ़ पार्टी का और मजबूती के साथ उभरना दूसरी पार्टियों के लिए सीखने का मौका है। ठीक इसी तरह से अरुणाचल प्रदेश में भाजपा की जीत अध्ययन का विषय है। अरुणाचल प्रदेश के पेमा खांडू और सिक्किम के प्रेम सिंह तमांग की गिनती मजबूत क्षत्रपों में होनी चाहिए। ये छोटे–छोटे राज्यों के लोकप्रिय मुख्यमंत्री हैं, जिन्होंने जनता की सेवा से अपने लिए रास्ता तैयार किया है।

अब सवाल यह उठता है कि अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के विधानसभा नतीजों से क्या संकेत लिया जाए? पहला संकेत तो यही है कि भाजपा के प्रति उतनी नाराजगी नहीं है, जितनी विपक्षी दलों को लग रही थी। दूसरा संकेत यह है कि क्षेत्रीय स्तर पर जो मजबूत नेता हैं, उनको हिलाने में राष्ट्रीय पार्टियां अब बहुत सक्षम नहीं रहीं। क्षेत्रीय स्तर पर जो नेता अपना मोरचा सही ढंग से संभाल रहे हैं, उन्हें जीतने में ज्यादा परेशानी नहीं हो रही है। तीसरा संकेत, अगर कांग्रेस अपना खेमा मजबूत रख पाती, तो पूर्वोत्तर में इतनी कमजोर न होती। एक समय था, जब पेमा खांडू कांग्रेस में हुआ करते थे, उनके जैसे जमीनी आधार पर मजबूत नेता अगर पार्टी छोड़ जाएंगे, तो जाहिर है, पार्टी को फिर अपनी जमीन तैयार करने के लिए बहुत मशक्कत करनी पड़ेगी। चौथा संकेत, भाजपा के लिए अभी अनेक राज्य बड़ी चुनौती हैं। वह अरुणाचल प्रदेश में जीत गई है, पर सिक्किम विधानसभा में भी उसके पास सीटें होतीं, तो ज्यादा बेहतर होता। एक मजबूत राष्ट्रीय पार्टी की व्यापक क्षेत्रीय उपस्थिति अनिवार्य है। भाजपा हो या कांग्रेस देश की तमाम विधानसभाओं में उनकी मौजूदगी के गहरे निहितार्थ होंगे। बहरहाल, हमें लोकसभा चुनावों के नतीजों का इंतजार करना चाहिए।

लोकसभा चुनाव के अंतिम चरण का मतदान संपन्न होने के बाद अब सभी की नजरें चुनाव परिणाम की ओर लगी हुई हैं। चुनाव आयोग ने शनिवार को कहा कि लोकसभा चुनाव और आंध्र प्रदेश तथा ओडिशा विधानसभा चुनाव के तहत डाले गए मतों की गिनती चार जून को सुबह आठ बजे शुरू होगी। विधानसभा उप चुनावों के लिए भी मतों की गिनती इसी दिन शुरू होगी।

आयोग ने कहा कि सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश विधानसभा चुनावों के लिए मतों की गिनती दो जून को सुबह छह बजे से शुरू होगी। इन दोनों राज्यों में विधानसभा चुनावों के लिए मतों की गिनती चार जून से बदलकर दो जून कर दी गई है। ऐसा इसलिए किया गया है, क्योंकि दोनों विधानसभाओं का कार्यकाल दो जून को समाप्त हो रहा है और इस दिन तक नए सदन का गठन किया जाना है। यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि इस बार केन्द्र में सरकार का स्वरूप किस रूप में सामने आयेगा।

अनचाहे व्हाट्सएप ग्रुप की विडंबना

–मनोज सिंह–

व्हाट्सएप, फेसबुक और यूट्यूब ने एक तरफ समाज के हर व्यक्ति के हाथ में पहुंच कर अपनी गहरी पैठ बना लिया है । जिसके चलते समाज में बड़ा बदलाव भी आया है और एक दूसरे के विचारों को जानने और समझने में बहुत बल मिलता है यूट्यूब में जो लोग जिस विचारधारा के होते हैं उसके अनुरूप उनको उसी तरह के वीडियो देखने को मिलते रहते हैं इसी तरह फेसबुक में जिस तरह के पोस्ट आप देखते रहेंगे गूगल उसी तरह के पोस्ट दिखाता रहेगा ।

समाज में जैसे सज्जन और दुर्जन हर जगह मिल जाएंगे इस तरह यूट्यूब पर हर तरह के वीडियो उपलब्ध है जैसा आप देखना शुरू करेंगे उसी तरह का हजारों वीडियो देखने को मिलेंगे ।

फेसबुक में एक तरफ जहां देश में घट रही घटनाएं और सामाजिक क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले लोगों के बारे में जानने को मिलता है वही फेसबुक पर निर्लज्जता भी इस कदर बढ़ गई है वर्तमान समय फेसबुक पर कोई महिला के फोटो लगा कर अधिक वेतन का लालच देकर ड्राइवर खोज रहा है लाइक और कमेंट के माध्यम से वही बच्चा पैदा करने का विज्ञापन मोटा पैसा देने का लालच देकर चल रहा लाइक और कमेंट से जिसके चलते ठगी का कार्य चल रहा है कुछ मामलों में पर्दाफाश भी हुआ है इसके बाद भी लाखों लोग सबक लेने को तैयार नहीं फेसबुक पर यदि सकारात्मक बात कोई लिखता है तो उसे पर 10, 20 ,50, कमेंट आते हैं लेकिन यदि अश्लील पोस्ट होता है तो उस पर हजारों से अधिक कमेंट और लाइक किए जाते हैं इससे पता चलता है कि समाज कितना दूषित हो चुका है ।

बड़ा सवाल यह उठता है की इस तरह के पोस्टों के माध्यम से आए दिन लोग ठगे जा रहे हैं उसके उपरांत ना तो सरकार के वह जिम्मेदार लोग जिनके कंधों पर ऑनलाइन ठगी से बचाने की जिम्मेदारी है ऐसी पोस्टों पर कार्रवाई क्यों नहीं होती ? दूसरी तरफ समाज के उन लोगों को भी सबक लेना चाहिए इस तरह के घटिया पोस्टों पर कमेंट और लाइक से बचना चाहिए ।

व्हाट्सएप और व्हाट्सएप ग्रुप पर अपने विचार रखने का बहुत सशक्त माध्यम है अब तो फोन करने के स्थान पर लोग अपनी बात कह कर छोड़ देते हैं दूसरी तरफ से जब व्यक्ति फुर्सत में होता है तो प्रतिउत्तर देता है या फोन करता है वही आपसी विचार विमर्श करने का भी बहुत सशक्त मध्य हो गया है क्योंकि कमरों में बैठकर बहस करते समय एक या दो ही व्यक्ति अपनी बात घंटों रखते हैं और दूसरे साथी का 5 मिनट भी सुना नहीं चाहते लेकिन व्हाट्सएप पर यह संभव है कि कोई घंटे भर अपनी बात रखें तो दूसरा व्यक्ति 5 मिनट अपनी भी बात रख सकता है और उस पर सबको गौर भी करना पड़ता है ।

वर्तमान समय में व्हाट्सएप पर व्हाट्सएप ग्रुपों की भरमार हो गई है कुछ ऐसे व्हाट्सएप ग्रुप समाचार के है जिससे लोग स्वयं जुड़ना चाहते हैं । लेकिन वही अधिकांश ऐसे व्हाट्सएप ग्रुप है जिनको आपके परिचितों में बना लिया है और आप जैसे 100, 200, 500 ,लोगों को जोड़ भी लिया है अपने मन मुताबिक पोस्ट भेजते हैं और अपनी ही जय हो सुनना चाहते हैं यदि किसी ने किसी पोस्ट या वीडियो पर सच और कड़वा टिप्पणी कर दिया उसकी पोस्ट ही डिलीट कर देते हैं उसे ग्रुप के एडमिन ।, ऐसा प्राय देखने को मिलता है बहुत से लोग सामाजिक कार्य और सामाजिक संगठन व्हाट्सएप ग्रुप और फेसबुक पर ही चला रहे हैं ऐसे ग्रुपों और फेसबुक पर बहुत से क्रांतिकारी साथी मिल जाते हैं बहुत अच्छी–अच्छी बातें भी करते हैं लेकिन जमीन पर बैठकर नहीं व्हाट्सएप और फेसबुक पर सामाजिक और राजनीतिक बदलाव की प्रेरणा जिनको लेना हो वह बिहार में 17 महीना से अधिक समय से गांव–गांव और कस्बों में प्रशांत किशोर जी और विहार के सैकड़ों युवा और समाज के प्रबुद्ध जन पदयात्रा करके दिन–रात पसीना बहाकर लोगों से मिलकर उनकी समस्या और उनके मनोभावों को समझने का प्रयास कर रहे हैं साथ ही दर्जनों व्हाट्सएप ग्रुप चौनल जन सुराज सामाजिक संस्था के चल रहे हैं जिस पर बराबर बिहार में जन सुराज के माध्यम से हो रही गतिविधियों को देखने को मिल रहा है और उससे एक उम्मीद भी जाग रही है कि 2025 में संभवतः बिहार विधानसभा की राजनीति का नया सूरज उदय होने की संभावना है ।

व्हाट्सएप ग्रुप इस स्तर का होना चाहिए कि लोग स्वयं जुड़ना चाहे लेकिन कुछ अनचाहे ग्रुप ऐसे होते हैं कि जिससे व्यक्ति चाह कर भी बाहर इसलिए नहीं निकल पाता क्योंकि ग्रुप एडमिन उसका परिचित यह जान जाएगा कि वह ग्रुप से बाहर हो गए हैं ।

व्हाट्सएप और व्हाट्सएप ग्रुप आज भी विचार विमर्श करने और अपने विचार रखने का सशक्त माध्यम है लेकिन केवल अपनी ही नहीं दूसरों को भी मौका देना चाहिए अपने विचार रखने के लिए ।

एग्जिट पोल के संदेश पर कितना भरोसा

– कमलेश पाण्डेय–

कोई भी एग्जिट पोल चुनाव परिणाम तो नहीं होता, लेकिन बातों ही बातों में चुनाव परिणामों की ओर इशारे कर जाता है, जो अक्सर समय की कसौटी पर सही साबित होते आये हैं, कुछ प्रायोजित अपवादों को छोड़कर। इसलिए इसके मायने को गम्भीरता पूर्वक समझने की जरूरत होती है। जहां तक आम चुनाव 2024 के एग्जिट पोल के नतीजे की बात है तो ये शनिवार 1 जून को देर शाम तक सामने आ गए। जबकि वास्तविक नतीजे मंगलवार 4 जून को देर शाम तक प्राप्त हो पाएंगे।

यदि औसत की भी बात करें तो भाजपा नीत एनडीए गठबंधन को 350 से अधिक और कांग्रेस नीत इंडिया गठबंधन को 150 के कम सीटें प्राप्त होने का अनुमान लगाया गया है। वहीं, अन्य दल बमुश्किल 36 सीटें ही जीत पाएंगे। ये एग्जिट पोल भाजपा और कांग्रेस के बीच जनाधार के जबर्दस्त फासले के भी संकेत दे रहे हैं। क्योंकि जहां सिर्फ भाजपा को 300 से अधिक सीटें मिलने का अनुमान है, वहीं कांग्रेस एक बार फिर दो अंकों यानी लगभग 60 सीटों पर ही सिमटती नजर आ रही है।

इस प्रकार प्रथम दृष्टया एग्जिट पोल के नतीजे जाहिर कर चुके हैं कि जनता ने सत्ता परिवर्तन के लिए नहीं, बल्कि मजबूत विपक्ष के लिए जनादेश दिया है, जो एक नई बात है। क्योंकि चाहे 2014 का जनादेश हो या 2019 का, लोगों ने मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस को लोकसभा की कुल सीटों में से 10 प्रतिशत सीटों का भी जनादेश नहीं दिया था, जिससे दोनों लोकसभा में उसका कोई वैधानिक नेता प्रतिपक्ष तक नहीं बन पाया। क्योंकि नेता प्रतिपक्ष बनने के लिए लोकसभा की कुल सीटों में से 10 प्रतिशत सीटें जीतना अनिवार्य होता है। हालांकि, इस बार प्रतीत हो रहा है कि जनता विपक्ष पर भी मेहरबान है और उसे मजबूत बनाने के संकेत दे दिए हैं, ताकि वह मजबूती पूर्वक सरकार की पहरेदारी कर सके।

ऐसे में चर्चा आम है कि लोगों को मोदी सरकार की संतुष्टिकरण वाली नीतियां तो पसंद हैं, लेकिन कतिपय राजनीतिक व प्रशासनिक मामलों में उनकी मनमानी नापसंद भी है। इसलिए उन्हें थोड़ा कमजोर करते हुए उनके सामने एक मजबूत विपक्ष देने की कोशिश की है, ताकि दूरगामी व्यापक जनहित की रक्षा की जा सके। साफ शब्दों में कहें तो जनता को यह कतई पसंद नहीं है कि उनके वोट से बनने वाली सरकार पूंजीवादी ताकतों के हाथ में खेले और जनविरोधी कानून संसद में बनाये। जैसा कि पिछले 10 वर्षों में और बाजपेयी सरकार के 6 वर्षों में महसूस किया जा चुका है।

एग्जिट पोल के नतीजों से साफ है कि भाजपा जहां दिल्ली, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ और पूर्वोत्तर राज्यों में अपनी यथास्थिति बनाये रखने में सफल हुई है, वहीं दक्षिण भारत में कमल खिलाने के उसके मंसूबे भी पूरे होने वाले हैं। इसके अलावा, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र, बिहार, झारखंड, हरियाणा में भाजपा को उतनी क्षति नहीं हो रही है, जितना कि चुनाव पूर्व अनुमान लगाया गया। वहीं, दक्षिण भारत में कांग्रेस की स्थिति और मजबूत हुई है, जबकि हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा आदि राज्यों में कांग्रेस की स्थिति मजबूत हुई है। बिहार में राजद, उत्तरप्रदेश में समाजवादी पार्टी, पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस, झारखंड में झामुमो, दिल्ली–पंजाब में आप, महाराष्ट्र में शिवसेना उद्धव और एनसीपी शरद पवार आदि के मजबूती के संकेत मिल रहे हैं। वहीं, नरेंद्र मोदी की सरकार के लगातार तीसरी बार सत्तारूढ़ होते ही वो देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के लगातार तीसरी बार सरकार बनाने के रिकॉर्ड की बराबरी करके इतिहास रच देंगे। कांग्रेस के बाद भाजपा के लिए भी यह बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

एग्जिट पोल के नतीजे कांग्रेस और भाजपा दोनों को यह स्पष्ट संदेश दे रहे हैं कि भारतीय राजनीति में उन्हें यदि प्रासंगिक बने रहना है तो अपनी नीति रीति में व्यापक बदलाव करने होंगे, अन्यथा लोग क्षेत्रीय दलों को आगे बढ़ाएंगे जो कि उनके अरमानों के सच्चे और अच्छे प्रतिबिंब होते हैं। यही वजह है कि पिछले दो लोकसभा चुनावों में मृतप्राय हो चले क्षेत्रीय दल इस बार के लोकसभा चुनाव में पूरी मजबूती के साथ उभरे हैं और जहां–जहां पर वो कांग्रेस या भाजपा के साथ रहे, वहां पर उन्होंने उन्हें लाभांवित भी किया है। यह बात एनडीए से ज्यादा इंडिया गठबंधन पर लागू होती है।

एग्जिट पोल के नतीजों से साफ है कि भाजपा जहां दिल्ली, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ और पूर्वोत्तर राज्यों में अपनी यथास्थिति बनाये रखने में सफल हुई है, वहीं दक्षिण भारत में कमल खिलाने के उसके मंसूबे भी पूरे होने वाले हैं। इसके अलावा, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, महाराष्ट्र, बिहार, झारखंड, हरियाणा में भाजपा को उतनी क्षति नहीं हो रही है, जितना कि चुनाव पूर्व अनुमान लगाया गया। वहीं, दक्षिण भारत में कांग्रेस की स्थिति और मजबूत हुई है, जबकि हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा आदि राज्यों में कांग्रेस की स्थिति मजबूत हुई है। बिहार में राजद, उत्तरप्रदेश में समाजवादी पार्टी, पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस, झारखंड में झामुमो, दिल्ली–पंजाब में आप, महाराष्ट्र में शिवसेना उद्धव और एनसीपी शरद पवार आदि के मजबूती के संकेत मिल रहे हैं। वहीं, नरेंद्र मोदी की सरकार के लगातार तीसरी बार सत्तारूढ़ होते ही वो देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के लगातार तीसरी बार सरकार बनाने के रिकॉर्ड की बराबरी करके इतिहास रच देंगे। कांग्रेस के बाद भाजपा के लिए भी यह बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

लिहाजा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ठीक ही कहा है कि वह विश्वास के साथ कह सकते हैं कि लोगों ने राजग सरकार को फिर से चुनने के लिए रिकॉर्ड संख्या में मतदान किया है। क्योंकि लोगों ने हमारी सरकार का ट्रैक रिकॉर्ड देखा है। हमारी सरकार के कार्यकाल में गरीबों, हाशिए पर पड़े लोगों और दलितों के जीवन में गुणात्मक सुधार आया है। लोगों ने यह भी देखा है कि किस प्रकार भारत में सुधारों ने देश को पांचवीं सबसे बड़ी वैश्विक अर्थव्यवस्था बना दिया है। उन्होंने तंज कसते हुए यहां तक कह दिया कि अवसरवादी इंडिया गठबंधन मतदाताओं के दिलों को छूने में विफल रहा। मतदाताओं ने विपक्ष की पुराने दिनों में चले जाने की राजनीति को खारिज कर दिया।

अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के जनादेश का संकेत

–नीरज कुमार दुबे–

पूर्वोत्तर के दो राज्यों– अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के विधानसभा चुनाव परिणाम सामने आ गये हैं। दोनों ही राज्यों में जनता ने वर्तमान सरकार को ही दोबारा सेवा का अवसर दिया है। हालांकि यह दोनों परिणाम बहुत बड़े संदेश भी देकर गये हैं। पहला संदेश यह है कि भाजपा ने पूर्वोत्तर में अपनी जड़ें गहरें तक जमा ली हैं। दूसरा संदेश यह है कि कांग्रेस यहां खत्म हो चुकी है। तीसरा संदेश यह है कि क्षेत्रीय दल पूर्वोत्तर में व्यापक जनाधार रखते हैं। अरुणाचल प्रदेश में प्रभासाक्षी की चुनाव यात्रा के दौरान हमने देखा था कि वहां की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति अटूट विश्वास रखती है। लोगों ने हमसे बातचीत में कहा था कि जिस तरह पिछले दस सालों में अरुणाचल प्रदेश को विकास की तमाम सौगातें मिली हैं, जिस तरह यहां सड़क संपर्क को लेकर तेजी से काम हुआ है और सुदूर इलाकों तथा देश के अंतिम गांवों में भी बुनियादी सुविधाओं को मजबूत किया गया है उसके चलते प्रदेश की जनता भाजपा के साथ खड़ी है। इसके अलावा भाजपा ने अपने संकल्प पत्र में जिस तरह युवाओं को आगे बढ़ाने के लिए तमाम तरह के वादे किये थे और इस राज्य में पर्यटन को नये पंख देने के लिए जो रूपरेखा जनता के बीच रखी थी उसका भी प्रभाव चुनावों में देखने को मिल रहा था।

यहां भाजपा की लोकप्रियता का आलम यह था कि चुनावों की घोषणा के साथ ही पार्टी ने 10 सीटों पर निर्विरोध जीत हासिल कर ली थी। चुनावों के दौरान ईटानगर में भाजपा के मुख्यालय से लेकर जिलों के कार्यालयों तक में हमें जहां गहमागहमी देखने को मिली वहीं कांग्रेस के दफ्तरों में सन्नाटा पसरा हुआ था। हमने पाया था कि अरुणाचल में मुख्यमंत्री पेमा खांडू की लोकप्रियता भी काफी थी और उनके कामकाज को लोग पसंद करते हैं। यहां चुनावों के दौरान भाजपा ने कांग्रेस मुक्त अरुणाचल के नाम से जो अभियान चलाया था उसको भी काफी सफलता मिली थी क्योंकि जहां–जहां से यह यात्रा गुजरती थी वहां–वहां के कांग्रेसी नेता या कार्यकर्ता भाजपा का दामन थाम रहे थे। कांग्रेस को अरुणाचल प्रदेश में जो एक विधानसभा सीट मिली है वह दर्शा रही है कि पार्टी यहां खत्म हो चुकी है। यह स्थिति तब है जब हाल ही में अपनी भारत जोड़ो यात्रा लेकर राहुल गांधी ईटानगर पहुँचे थे और भाजपा पर तमाम प्रहार किये थे।

वहीं सिक्किम की बात करें तो यहां जब हमने लोगों से बातचीत की थी तो लोगों ने साफ कर दिया था कि हमें भाजपा या कांग्रेस से कोई नाराजगी नहीं है लेकिन हम चाहते हैं कि यहां की सरकार कोई क्षेत्रीय दल ही संभाले। लोगों ने कहा था कि यदि भाजपा या कांग्रेस यहां सत्ता में आ गयीं तो वह हमारे खूबसूरत राज्य को शिमला, दार्जिलिंग जैसा भीड़भाड़ वाला इलाका बना देंगी। लोगों ने कहा कि भाजपा या कांग्रेस के यहां सत्ता में आने पर दिल्ली के लोग आकर गंगटोक में होटल ही होटल बना देंगे और यहां आने वाली गाड़ियों की संख्या बढ़ने पर हमारा राज्य भी वायु प्रदूषण की समस्या झेलने लगेगा। लोगों ने कहा था कि इस शांत राज्य की यही जरूरतें हैं इस बात को क्षेत्रीय दल भलीभांति समझते हैं इसलिए हम उनको ही वोट देंगे। लोगों ने कहा कि 25 साल तक हमने पवन कुमार चामलिंग को मौका दिया और अब युवा मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग अच्छा काम कर रहे हैं तो उन्हें ही अवसर देना चाहिए। लोगों ने यह भी कहा था कि भाजपा या कांग्रेस की सरकार बनने पर मुख्यमंत्री दिल्ली के निर्देश पर काम करेगा लेकिन क्षेत्रीय दल का मुख्यमंत्री बनने पर वह यहां की जनता के हिसाब से काम करेगा।

बहरहाल, यह दोनों चुनाव परिणाम दर्शा रहे हैं कि स्थानीय जनता विकास को और अपने राज्य की तरक्की को तवज्जो देती है। साथ ही दोनों राज्य की जनता ने खिचड़ी सरकार बनाने से परहेज कर स्पष्ट और प्रचंड बहुमत वाली सरकार बनाकर अपनी विद्वता का भी परिचय दिया है।

दहेज उत्पीड़न और हत्या के आरोपी पति, सास, ससुर को जेल

संवाददाता—महराजगंज। थाना क्षेत्र के गांव चकदह टोला आजाद नगर में संदिग्ध हालात में 22 वर्षीय विवाहिता की मौत मामले में आरोपी पति, सास और ससुर को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। बाद में न्यायालय चालान कर जेल भेज दिया। नौतनवा थाना क्षेत्र के गांव चकदह टोला आजाद नगर निवासी नाजिया (22) पत्नी मोहम्मद नावेद की 14 मई को घर के अंदर संदिग्ध हालात में मौत हो गई थी। मृतका के पिता निजामुद्दीन निवासी सिसवानिया उर्फ शीशमहल टोला परसहवा थाना परसा मलिक ने तहरीर देकर दहेज के लिए प्रताड़ित करने व हत्या करने का आरोप लगाया था।

पुलिस ने तहरीर के आधार पर पति मोहम्मद नावेद, ससुर शमशेर, सास सोनवा उर्फ लंगड़ी, जेठ जुनेद, जेठान हसीना, ननद शहीमुन, जेठ जावेद के खिलाफ दहेज के लिए प्रताड़ित करने तथा हत्या करने की धाराओं में केस दर्ज कर आरोपियों की तलाश में जुटी थी। सोमवार को पुलिस ने थाना क्षेत्र के रतनपुर नहर से पति, ससुर, सास को गिरफ्तार कर न्यायालय चालान कर जेल भेज दिया। प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार राय ने बताया कि तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर भेज दिया गया।

मकान खाली नहीं किया, मालिक ने बाहर से गिरा दिया शटर, अंदर बैंक चल रहा था

संवाददाता—महराजगंज। महराजगंज में एक मकान मालिक ने पांच माह पहले नोटिस देकर बैंक खाली करने के लिए कहा था। इसके बाद भी बैंक के जिम्मेदारों ने मकान नहीं किया खाली। नाराज मालिक ने सोमवार को बैंक को बिना बताए ही बाहर से शटर गिराकर बंद कर दिया। अचानक शटर गिरने से बैंक में हड़कंप मच गया। मामला महराजगंज के निचलौल शहर का है। निचलौल थाना प्रभारी निरीक्षक सत्यप्रकाश सिंह ने कहा की मामले में दोनो पक्ष आपस में बैठ कुछ शर्त के मुताबिक सुलह कर लिया गया है। इसके बाद फिर बैंक खोल उपभोक्ताओं की लेनदेन की समस्याओं को निपटाने में जुट गए।

एक-एक पल रहा भारी, प्रत्याशियों में दिखी परिणाम की बेकरारी

संवाददाता—बलरामपुर। लोकसभा चुनाव में फैसले की घड़ी आ गई है। जनमत किसके पक्ष में जाएगा इसका फैसला दोपहर दो बजे तक हो जाएगा। 12 प्रत्याशियों में किसके सिर जीत का सेहरा बंधेगा यह भी ईवीएम में कैद मतों की गणना के बाद सामने आ जाएगा। मतगणना के अंतिम पल में प्रत्याशियों की दिल की धड़कनें तेज रहीं। लोग एक दूसरे से चुनाव में पड़े मतों की गणना का गुणा भाग करते रहे। लोकसभा चुनाव के साथ—साथ गैसड़ी की जनता उप चुनाव में किसे अपना विधायक चुनी है, उसके फैसले का दिन आज ही है।

लोकसभा चुनाव में दोनों जिलों को मिलाकर पांच विधानसभाओं में कुल 1026253 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। लोकसभा के इस चुनाव में कुल 12 प्रत्याशी मैदान में हैं। इसमें प्रमुख रूप से सत्तारूढ़ दल भाजपा के साकेत मिश्र, इंडिया गठबंधन के सपा प्रत्याशी के रूप में सांसद राम शिरोमणि वर्मा व बसपा से मुइनुद्दीन खां उर्फ दद्दन खां प्रत्याशी हैं। भाजपा से चुनाव लड़ रहे पूर्व नौकरशाह साकेत मिश्र प्रधानमंत्री मोदी के सलाहकार रहे राम मंदिर निर्माण समिति के अध्यक्ष नृपेन्द्र मिश्र बेटे हैं। साकेत के कारण श्रावस्ती लोकसभा प्रदेश की हॉट सीटों में आ गई है। 2019 के चुनाव में श्रावस्ती लोकसभा से भाजपा को मामूली वोटों से हार का सामना करना पड़ा था। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी बाजपेयी की कर्मस्थली कही जाने वाली यह सीट भाजपा के लिए बेहद प्रतिष्ठापूर्ण है। वहीं दूसरी ओर 2019 में बसपा से चुनाव जीतने वाले सांसद राम शिरोमणि वर्मा के सामने अपनी सीट को बचाना चुनौतीपूर्ण है। हालांकि राजनीतिक दलों के प्रत्याशी और उनके समर्थक अपनी—अपनी जीत का दावा कर रह हैं। जनता ने अपना मत किसे दिया है यह आज ईवीएम खुलने के बाद सामने आ जाएगा। फैसले की इस घड़ी का एक—एक पल प्रत्याशियों के लिए बेचैनी भरा रहा। सभी प्रत्याशी अंतिम समय तक गुणाभाग में जुटे रहे।

इस चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी अपने प्रत्याशी को जिताने के लिए श्रावस्ती सीट को बेहद तवज्जो दी। गत 22 मई को प्रधानमंत्री मोदी ने सिर्फ एक लोकसभा के चुनाव प्रचार के लिए श्रावस्ती में रैली की थी। वहीं सीएम योगी ने भी यहां पर लोगों में खूब जोश भरा था। जातीय समीकरण के लिहाज से केन्द्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल, मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री मोहन यादव, मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह, उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य व ब्रजेश पाठक सहित कई नेताओं ने यहां पर जनसभाएं की थीं। तो वहीं दूसरी ओर सपा मुखिया अखिलेश यादव भी गैसड़ी और बलरामपुर में जनसभाएं की थीं।

इस बार के लोकसभा चुनाव में खासकर तीन विधानसभाओं में कम वोटिंग हुई है। जिससे चुनाव परिणाम कुछ भी हो सकता है। लोकसभा में शामिल श्रावस्ती विधानसभा में इस बार सबसे अधिक 58.91 फीसदी मतदान हुआ है। जबकि भाजपा के लिए हमेशा से मुफीद साबित रहने वाली बलरामपुर सदर विधानसभा में सबसे कम 47.06 प्रतिशत ही मतदान हुआ है। तुलसीपुर में 49.80 व गैसड़ी में 51.23 फीसदी लोगों ने मताधिकार का प्रयोग किया है। जबकि भिनगा विधानसभा में 56.80 फीसदी मतदाताओं ने वोट डालें हैं। यहां यह बताना जरूरी है कि 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को श्रावस्ती जिले की दोनों विधानसभाओं में हार का सामना करना पड़ा था। इस बार इन दोनों विधानसभाओं में बढ़ा वोट प्रतिशत किसके पक्ष में गया है यह इस चुनाव में बेहद दिलचस्प होगा।

सोनू की हत्या को लेकर ग्रामीणों ने कोतवाली गेट पर किया प्रदर्शन, पुलिस पर लगाया गंभीर आरोप

संवाददाता—देवरिया। सलेमपुर के धनगड़ा गांव के तीन दर्जन से अधिक लोग महिलाओं के साथ सोमवार की सुबह करीब 11 बजे कोतवाली पहुंचे। ग्रामीणों ने पुलिस पर लापरवाही बरतने का आरोप लगाते हुए हंगामा शुरू कर दिया। उधर, पुलिस कर्मियों के आश्वासन के बाद मामला शांत हुआ। आरोप है कि 25 मई की रात सोनू की हत्या हुई थी, जिसमें पुलिस ने आरोपितों के बचाव के लिए हत्या के बजाए गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज कर मुख्य आरोपित को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। लेकिन, अभी तक अन्य आरोपितों की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है। कोतवाली थाना क्षेत्र के धनगड़ा गांव के सोनू कुमार (21) पुत्र कृष्ण कुमार का गांव के एक व्यक्ति के यहां आना जाना लगा रहता था। इसको लेकर उसके परिवार के लोग नाराज रहते थे। आरोप है कि 25 मई की रात में गांव के बबलू कुमार ने सोनू को फोन कर घर बुलाया और पहले से घात लगाकर उसके साथ आए बदमाशों ने सोनू के पहुंचते ही लोहे की राड से उसके उपर हमला कर दिया।

इस दौरान एक युवक ने सोनू पर चाकू से भी ताबड़तोड़ हमला कर लहुलुहान कर दिया। खबर मिलते ही परिवार के लोग आनन—फानन घटना स्थल पर पहुंचे, जहां सोनू अचेतावस्था में पड़ा हुआ था। परिवार के लोगों ने सोनू को लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए। वहां पर डॉक्टर ने गंभीर स्थिति देख मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर कर दिया। 26 मई की भोर में सोनू की इलाज के दौरान मौत हो गई। घटना की सूचना मृतक के चाचा हरेंद्र प्रसाद पुत्र राम रतन ने कोतवाली पुलिस तहरीर देकर हत्यारों पर कार्रवाई की मांग की।

आरोप है कि पुलिस ने औपचारिकता दिखाते हुए हत्या के मामले में गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज कर गांव के बबलू पुत्र कन्हैया को जेल भेज दिया। जबकि अन्य सभी आरोपित खुलेआम घूम रहे हैं। पुलिस की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए सोमवार सुबह करीब 11 बजे तीन दर्जन से अधिक की संख्या में ग्रामीण कोतवाली पहुंचे और हंगामा करते हुए कोतवाली गेट पर जमकर विरोध प्रदर्शन करने लगे। पुलिसकर्मियों के आश्वसन के बाद मामला शांत हुआ। सीओ दीपक शुक्ला ने बताया कि इस मामले में केस दर्ज है। मृतक के परिजनों का आरोप है कि हत्या के बजाए गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज है। लोगों की मांग को गंभीरता से लेते हुए विवेचक को विवेचना निष्पक्ष करने को कहा गया है।

क्षेमा फसल बीमा योजना को मिली स्वीकृति

—भारतीय बस्ती संवाददाता— अयोध्या। क्षेमा जनरल इंश्योरेंस लिमिटेड ने आज अपने प्रमुख फसल बीमा उत्पाद सुकृति के साथ—साथ प्रकृति को भारत के 20 राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों में उपलब्ध कराने की घोषणा की। अब, भारत की जीडीपी में लगभग 15 प्रतिशत योगदान देने वाले किसान अपनी फसलों का बीमा करवा सकते हैं क्योंकि मानसून के आगमन के साथ ही खरीफ की बुवाई का महत्वपूर्ण समय आरंभ होता है क्षेमा सुकृति की विस्तृत पहुंच किसानों और उनके परिवार के उन सदस्यों के लिए एक वरदान है, जिनकी बीमायोग्य आय होती है। वे मुफ्त में पंजीकरण कर सकते हैं और केवल 499 रुपये प्रति एकड़ की दर से अपनी फसलों का बीमा करा सकते हैं। किसान क्षेमा ऐप पर लॉग—इन करके सुकृति को कुछ आसान स्टेप्स में खरीद सकते हैं, जो भारत का पहला और एकमात्र स्वनिर्धारित फसल बीमा उत्पाद है। सुकृति किसानों को नौ जोखिमों में से एक मुख्य और एक सहायक परिस्थिति का चयन करने का विकल्प देती है।

यह खूबी उन्हें उन परिस्थितियों का चयन करने में सहायता करता है जो उनकी फसल को, जलवायु, क्षेत्र, खेत का स्थान, अन्य ऐतिहासिक प्रवृत्तियों आदि के आधार पर, सबसे ज्यादा प्रभावित कर सकती हैं। कवर किए गए जोखिमों में चक्रवात, जल—जमाव ज्वलप्रिय फसलों के लिए लागू नहीं, बाढ़, ओलावृष्टि शामिल हैं, जबकि छोटे जोखिमों में भूकंप, भूस्खलन, बिजली से लगी आग, जानवरों का हमला बवंडर, खरगोश, जंगली सूअर, हाथी और विमान से होने वाले नुकसान शामिल हैं।सुकृति अब किसानों और उनके परिवार के बीमा योग्य आय रखने वाले सदस्यों के लिए और भी आकर्षक हो गई है। वे अब अपने घर से ही सुकृति खरीद सकते हैं और 100 से अधिक मौसमी फसलों का बीमा करा सकते हैं। यह योजना प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना सहित किसी भी अन्य बीमा योजना की तुलना में अधिक फसलों को कवर करती है। किसान, सुकृति खरीदते समय, अतिरिक्त प्रीमियम देकर बीमित राशि बढ़ाने का विकल्प चुन सकते हैं ताकि अपने वित्तीय हितों की सुरक्षा कर सकें। क्षेमा ने बीमा खरीदने से लेकर दावा जमा करने तक की उपभोक्ता जर्नी को ऐप द्वारा सहज बना दिया है।

सीढ़ी लगाकर घर में घुसे, लाखों का माल उड़ाया

संवाददाता—गोण्डा। थाना क्षेत्र में चोरी की घटनायें थमने का नाम नही ले रही है। बीते एक माह से इलाके में हो रही वारदातों से गांव वाले दहशत में जी रहे है। हाल तो यहां तक हो गया है कि लोग गांव में रेहड़ी, फेरी वालों को सामान बेचने के लिए गांव में घुसने से मना कर रहे है। रातों में गांव के चारों तरफ से हांका लगाकर चौकीदारी करनी शुरू कर दिया है। पुलिस की निष्क्रियता से आम जन परेशान है।

सोमवार बीती रात को थाना क्षेत्र के समदरियन पुरवा निवासी अशोक कुमार के यहां चोरों ने सीढ़ी लगाकर छत पर चढ़ कर घर में घुस गए। इसके बाद घर में रखी लाखों की नकदी और जेवरात पर हाथ साफ कर दिया। चोरी कर जाते समय घर में लगा सीसीटीवी कैमरा और उसका डीवीआर और एलसीडी भी खोल ले गए। चोरों ने इंडक्शन चूल्हा, पानी का मोटर, मोबाइल तक नही छोड़ा सभी सामान उठा ले गए। पीड़ित अशोक ने बताया कि वह अपने परिवार सहित छत पर सो रहा थे आधी रात के बाद जब लघुशंका के लिए उनकी नींद खुली तो देखा कि घर का सारा दरवाजा खुला है और चोर सारा सामान लेकर फरार हो चुके है। प्रभारी निरीक्षक संजय कुमार गुप्ता ने बताया कि चोरी की घटना हुई है मुकदमा दर्ज कर जांच की जा रही है।

लोहे के रॉड से सिर पर हमला कर युवक की हत्या, गांव के बाहर मिला शव

संवाददाता—बलरामपुर। बलरामपुर जिले की कोतवाली देहात क्षेत्र के शेखरपुर गांव में लोहे के राड से हमला कर युवक की हत्या कर दी गई।

सोमवार को युवक का शव गांव के बाहर खेत में मिला। शव के पास ही लोहे का राड व कच्ची शराब की शीशी मिली है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। मृतक के पिता सूर्यभान उपाध्याय की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। शेखरपुर गांव निवासी संदीप उपाध्याय (29) रविवार की रात करीब आठ बजे घर से निकला था। रात में वह लौटकर घर नहीं आया।

सोमवार की सुबह गांव के लोग बाहर निकले तो शेखरपुर—हरिहरगंज मार्ग के किनारे खेत में युवक का शव मिला। गांव के लोगों ने उसके पिता सूर्यभान को घटना की जानकारी दी। पिता ने पुलिस को सूचना दी। कोतवाल दुर्गेश सिंह ने बताया कि मौके से हत्या में प्रयुक्त लोहे का राड बरामद हुआ है। मामले की जांच की जा रही है। रात में संदीप के साथ कौन लोग थे उनकी पहचान के लिए पुलिस टीम लगाई गई है।

पिकअप की चपेट में आने से किशोर की गई जान

संवाददाता—महराजगंज। थाना क्षेत्र बृजमनगंज—कोल्हुई मार्ग पर लोहरसन गांव के सामने सोमवार दोपहर पिकअप की ठोकर से बाइक सवार किशोर की मौत हो गई, जबकि पीछे बैठा युवक घायल हो गया। उसे इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बृजमनगंज ले जाया गया। हालत गंभीर देख डॉक्टरों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

बृजमनगंज—कोल्हुई मार्ग पर लोहरसन के पास ग्रामसभा गुजरौलिया के टोला नौडीहवा निवासी विनय और छ्ट्टू बाइक से बृजमनगंज बाजार से अपने घर जा रहे थे। कोल्हुई की तरफ से तेज रफ्तार में आ रही अनियंत्रित पिकअप ने सामने से जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में 16 वर्षीय छ्ट्टू की मौके पर ही मौत हो गई। टक्कर इतनी तेज थी कि छ्ट्टू के दाहिने पैर का घुटने के नीचे का हिस्सा उखड़ कर दूर जा गिरा, जबकि विनय को गंभीर चोटें आई हैं। बृजमनगंज थानाध्यक्ष श्याम सुंदर तिवारी ने बताया कि पिकअप को कब्जे में ले लिया गया है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है।

केबिल को लेकर खूनी संघर्ष, सात घायल

संवाददाता—गोण्डा। थाना कोतवाली देहात के सालपुर चौकी क्षेत्रान्तर्गत ग्राम मुड़ाडीह में केबिल के विवाद को लेकर दो पक्ष आमने—सामने आ गए। दोनों ओर से जमकर लाठी—डंडे और धारदार हथियार चले जिसमें सात लोग घायल हो गए। दोनों पक्षों की तहरीर पर पुलिस ने आठ लोगों के खिलाफ क्रास केस दर्ज कर लिया है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच शुरू कर दी गई है। चोटिल लोगों का चिकित्सीय परीक्षण कराया जा रहा है। थानाक्षेत्र के ग्राम मुड़ाडीह के महिपाल उर्फ महाजन वर्मा ने कोतवाली देहात में दी तहरीर में आरोप लगाया है कि बीते दो जून को मैं अपने भाई रामपाल वर्मा के साथ सिंचाई करने के लिए जा रहा था। रास्ते में विपक्षी तुलाराम, खरभान वर्मा दुकान पर बैठे थे। आरोप है कि मंशाराम वर्मा, तुलाराम वर्मा, रामचरन वर्मा व रामसुरेमन ने एक राय होकर उसे लाठी—डंडे व धारदार हथियार से मारना शुरू कर दिया। इसमें रामपाल, जसदेव वर्मा, पंकज वर्मा को गंभीर चोटें आई हैं। दूसरी ओर तुलाराम वर्मा ने अपनी तहरीर में आरोप लगाया है कि मैंने अपनी जमीन में पंपसेट लगा रखा है। उसकी केबिल महिपाल वर्मा उर्फ महाजन, रामपाल वर्मा, अमरजीत वर्मा, दीपू उर्फ दिलीप वर्मा आदि निकाल ले गए। जब मैंने विरोध किया तो मुझे व मेरे भतीजे रामप्रीत वर्मा, हीरालाल वर्मा के साथ अभद्रता करते हुए मारपीट कर घायल कर दिया।

भीषण गर्मी का प्रकोप जारी,खराब हैंडपंप बढ़ा रहे परेशानी

संवाददाता—श्रावस्ती। भीषण गर्मी का दौर जारी है। रविवार को हुई मामूली बारिश के कारण तापमान में गिरावट जरूर हुआ लेकिन गर्मी से निजात नहीं मिला। सोमवार को अधिकतम तापमान 41 और न्यूनतम 29 डिग्री रहा। दोपहर में तेज धूप और गर्मी के कारण घरों से बाहर निकलना दूभर हो गया। वहीं गर्मी में खराब पड़े नल पेयजल संकट पैदा कर रहे हैं। गर्मी के कारण पेयजल की मांग अधिक है। गांवों में पेयजल के लिए केवल नल ही एक मात्र सहारा हैं। लेकिन वे भी खराब पड़े हैं। ऐसे में पेयजल संकट के कारण परेशानी और बढ़ गई है। विकास क्षेत्र जमुनहा के ग्राम पंचायत हरदत्त नगर गिरंट के लड्डापुरवा गांव में जानकी यादव के पास लगा हैण्डपंप खराब पड़ा है। इसी तरह से नसीरपुरवा गांव के कब्रिस्तान पर हैण्डपम्प खराब और बरगदही गांव में जगराम वर्मा के घर के पास लगा हैण्डपंप खराब है। वहीं राढनपुरवा गांव के कब्रिस्तान पर हैण्डपंप, बालेपुरवा गांव में हरीराम के घर पास लगा हैण्डपंप, बलिदान पुरवा गांव में केशव राम के घर के पास लगा हैण्डपंप खराब है। इसी तरह से लुहारन पुरवा गांव में जानकी के घर के पास लगा हैण्डपंप खराब, सालिक पुरवा गांव में मिहीलाल गुप्ता के घर पास लगा हैण्डपंप खराब है। वहीं मुराउन पुरवा में इंद्रप्राप यादव के घर के पास लगा हैण्डपंप दूषित पानी दे रहा है। मुराउन पुरवा के ही बाबू के घर के पास लगा हैण्डपंप खराब, लल्लन के घर के पास लगा हैण्डपंप खराब, छेदी के हाता पर लगा हैण्डपंप खराब है। रजपुतिया गांव में राम निवास के घर के पास लगा हैण्डपंप खराब है। गुड़िया, अध्यक्ष त्रिसदस्यीय समिति हरदत्तनगर गिरंट ने कहा कि गांव में खराब पड़े कुछ हैण्डपंपों को बनवाया गया है। लेकिन उसका पैसा अभी तक भुगतान नहीं हुआ है। जैसे पैसे मिलते है कि तत्काल हैण्डपंप को सही करवा दिया जायेगा।

मतगणना कर्मी और एजेंट नहीं ले जा सकेंगे मोबाइल

संवाददाता—कुशीनगर। शहर के यूएन कॉलेज में चार जून को होने वाले मतगणना स्थल पर मतदानकर्मी और एजेंट अपने साथ मोबाइल फोन लेकर अंदर नहीं जा सकेंगे। प्रत्याशियों के साथ मौजूद सुरक्षाकर्मियों को भी शस्त्र लेकर अंदर जाने की अनुमति नहीं है। गर्मी को देखते हुए एजेंट पानी की बोतल लेकर अंदर जा सकते हैं। लेकिन सर्विस वोट की गिनती वाले स्थान पर बोतल का पानी लेकर जाना भी प्रतिबंधित किया गया है। हालांकि मतदान स्थल पर पानी और छाया का व्यवस्था प्रशासन की ओर से किया गया है। जिला निर्वाचन अधिकारी उमेश मिश्रा ने बताया कि मतगणना को लेकर पारदर्शिता बरती जा रही है। इसके लिए स्ट्रांग रूम से मुख्य गेट तक सीसी टीवी कैमरा लगाया गया है। मतदान के दिन भी टीवी स्क्रीन लगाई जाएगी, ताकि मतगणना की जानकारी होती रहे। मतगणना के दिन सुबह सात बजे तक मतगणना एजेंटों को पहुंचना है। कुशीनगर लोकसभा सीट के अलावा देवरिया लोकसभा क्षेत्र के तमकुहीराज और फाजिलनगर विधानसभा क्षेत्र की मतगणना भी होगी। मतगणना स्थल पर प्रत्याशी दो वाहन से जा सकेंगे। एक वाहन में प्रत्याशी होगा, दूसरे वाहन का प्रयोग मतगणना एजेंट के लिए नाश्ता और खाना लाने में होगा। मतगणनाकर्मी सुबह छह बजे यूएन कॉलेज में पहुंच जाएंगे। इसके बाद सात बजे सभी प्रत्याशी और उनके एजेंट की मौजूदगी में ईवीएम बाहर निकालने के लिए स्ट्रांग रूम का खोला जाएगा। 15 मिनट तक गैस की आशंका के चलते कोई भी कर्मचारी स्ट्रांग रूम में प्रवेश नहीं करेगा। सुबह आठ बजे वैलेट पेपर की मत पेटिकाएं और पोस्टल बैलेट गणना टेबल पर पहुंचेगी।

यूएन पीजी कॉलेज में मतगणना के दौरान धूप से बचाव के लिए टेंट लगाए जाएंगे और गर्मी से बचाव के लिए कूलर पंखे की व्यवस्था की जाएगी। कुशीनगर और देवरिया लोकसभा क्षेत्र के दो विधानसभा क्षेत्रों की मतगणना अगल—अलग होगी। इसके लिए तैयारी भी अलग—अलग की गई है। मौसम खराब होने की स्थिति को देखते हुए प्रशासन की ओर से तैयारियां की गई है।

जिला निर्वाचन अधिकारी उमेश मिश्रा ने बताया कि मतगणना के दौरान या इसके बाद किसी ने अफवाह फैलाने की कोशिश की तो उसके खिलाफ कार्रवाई होगी। किसी को कानून के साथ खिलवाड़ नहीं करने दिया जाएगा। जिला निर्वाचन अधिकारी ने कहा कि जिस प्रकार निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से मतदान हुआ है। उसी प्रकार मतगणना भी संपन्न कराई जाएगी। मतगणना से पूर्व पुलिस—प्रशासन से सकुशल मतगणना संपन्न कराने के लिए खाका तैयार कर लिया है।

आज आएगा जनता का फैसला, मतगणना आठ बजे से

संवाददाता—बलरामपुर। आज सुबह आठ बजे से मंडी समिति भगवतीगंज में दो प्रेक्षकों की निगरानी में लोकसभा चुनाव की मतगणना की जाएगी। लोकसभा के साथ—साथ गैसड़ी विधानसभा के उप चुनाव और गोंडा लोकसभा में शामिल उतरौला विधानसभा की मतगणना भी यहीं पर सम्पन्न होगी। इसके लिए सभी व्यवस्थाएं पूरी कर ली गई हैं। मतगणना के लिए विधानसभावार 14–14 टेबल लगाई गई हैं। पोस्टल बैलेट, ईटीपीवीएस की गणना के लिए अलग—अलग टेबल लगाए गए हैं। मतगणना को सम्पन्न कराने के लिए 420 कार्मिक लगाए गए हैं। मतगणना की पूरी प्रक्रिया प्रत्याशी व उनके अभिकर्ताओं की मौजूदगी में की जाएगी।

लोकसभा चुनाव का परिणाम आज आ जाएगा। इस परिणाम को लेकर लोगों में भारी उत्सुकता है। आज सुबह आठ बजे से मंडी समिति भगवतीगंज में ईवीएम में बंद मतों की गणना शुरू हो जाएगी। जिलाधिकारी अरविंद सिंह ने बताया कि मतगणना को निष्पक्ष व पारदर्शी रूप से सम्पन्न कराने के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। मतगणना के दौरान प्रेक्षक किशोर कुमार व जमुना मिड़े की अध्यक्षता में सोमवार को मतगणना कार्मिकों का द्वितीय रैंडमाइजेशन एनआईसी सभागार में निर्वाचन आयोग के साफ्टवेयर पर सकुशल सम्पन्न हुआ है। द्वितीय रैंडमाइजेशन के बाद मतगणना कार्मिकों को विधानसभा आवंटित करा दिया गया है। मतगणना शुरू होने से पहले कार्मिकों का अंतिम रैंडमाइजेशन भी कराया जाएगा। डीएम ने बताया कि श्रावस्ती लोकसभा की तीन विधानसभा बलरामपुर, तुलसीपुर, गैसड़ी एवं गोण्डा लोकसभा की उतरौला विधानसभा के साथ—साथ गैसड़ी विधानसभा के उपचुनाव की मतगणना भी मंडी समिति में होगी। सोमवार को ही मतगणना स्थल पर टेंट, वैरिकेडिंग आदि की व्यवस्था पूरी कर ली गई है। उन्होंने बताया कि विधानसभावार 14–14 टेबल पर मतगणना की जाएगी। मतगणना के दौरान भीषण गर्मी से बचाव के लिए स्थल पर शुद्ध पेयजल, पंखा, कूलर आदि की व्यवस्था की गई है। डीएम ने कहा कि मतगणना कार्मिक पानी बोतल अपने साथ रखें तथा समय—समय पर आवश्यकतानुसार ओआरएस के साथ पानी पीते रहें।

जिला निर्वाचन अधिकारी अरविंद सिंह ने बताया कि मतगणना स्थल की सुरक्षा पूरी तरह से अभेद्य होगी। दो प्रेक्षकों की निगरानी में मतगणना कराई जाएगी। प्रथम स्तर की सुरक्षा मतगणना स्थल से 100 मीटर की परिधि में होगी। जहां क्षेत्रीय पुलिस बल तैनात किए जाएंगे। द्वितीय स्तर की सुरक्षा मतगणना स्थल के गेट पर होगी। जहां राज्य पुलिस बल की तैनाती रहेगी। तृतीय स्तर की सुरक्षा मतगणना हॉल में होगी जहां पर केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बलों की तैनाती रहेगी। मतगणना के दौरान कोई भी व्यक्ति अव्यवस्था नहीं फैला सकेगा। अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। चक्रवार मतगणना की घोषणा की जाएगी। इसके अलावा चुनाव आयोग से जारी वेबसाइट पर भी लोग परिणाम देख सकेंगे। अलग—अलग विधानसभावार मतों की गणना की संख्या अलग होगी। सबसे अधिक राउंड में उतरौला विधानसभा की मतगणना सम्पन्न होगी। उतरौला में पड़े मतों की गिनती 33 राउंड में पूरी की जाएगी। जबकि तुलसीपुर व गैसड़ी विधानसभा में 30–30 राउंड में मतों की गणना की जाएगी। इसी तरह से बलरामपुर सदर विधानसभा में कुल 31 राउंड में मतगणना पूरी कर ली जाएगी।

श्रावस्ती व गोंडा लोकसभा चुनाव और गैसड़ी विधानसभा उप चुनाव की काउंटिंग आज सुबह आठ बजे से कराई जाएगी। मंडी समिति परिसर में श्रावस्ती संसदीय सीट से जुड़ी विधानसभा सदर के 433, तुलसीपुर के 414 व गैसड़ी के 413 बूथों के साथ गोंडा संसदीय सीट से जुड़ी उतरौला विधानसभा के 463 और गैसड़ी विधानसभा के उप चुनाव में 413 बूथों पर पड़े वोटों की गिनती की जाएगी। एक साथ 2136 बूथों पर पड़े वोटों की गिनती कराने के लिए 70 टेबल लगाई गई है। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र की मतगणना के लिए 14–14 टेबल सजाई गई है। प्रत्येक टेबल पर एक—एक माइक्रो आब्जर्वर व सुपरवाइजर तैनात किए गए हैं। प्रत्येक टेबल पर वोटों की गिनती के लिए एक—एक गणना पर्यवेक्षक, एक—एक सहायक गणना पर्यवेक्षक और ईवीएम लाने व ले जाने के लिए एक—एक चतुर्थ श्रेणी कर्मी को भी लगाया गया है। श्रावस्ती व गोंडा संसदीय सीट के साथ गैसड़ी विधानसभा के उप चुनाव में उतरे 27 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला वोटों की गिनती के साथ आज होगा। श्रावस्ती संसदीय सीट पर भाजपा के साकेत मिश्र, सपा के राम शिरोमणि वर्मा व बसपा के मोइनुद्दीन अहमद उर्फ दद्दन खां समेत 12 प्रत्याशियों के साथ, गोंडा संसदीय सीट पर भाजपा के कीर्तिवर्धन सिंह उर्फ राजा भइया व सपा की श्रेया वर्मा समेत आठ प्रत्याशियों के भाग्य का फैसला आज होगा। वहीं गैसड़ी विधानसभा उप चुनाव में भाजपा के शैलेश कुमार सिंह शैलू, सपा के राकेश कुमार यादव व बसपा के मोहम्मद हारिश खान सहित सात उम्मीदवारों के भी भाग्य का फैसला मतगणना के बाद आज किया जाएगा। प्रत्याशियों के एक—एक एजेंट को प्रत्येक टेबल पर काउंटिंग कराने के लिए पास जारी किया गया है। इसके लिए सभी उम्मीदवारों ने भी अपने—अपने एजेंट बनाए हैं।

यातायात प्रभारी उमेश सिंह ने बताया कि मंगलवार को जिले में लोकसभा चुनाव के मद्देनजर चार विधानसभा की सीटों की मतगणना भगवतीगंज स्थित मंडी समिति में होगी। जिसको लेकर सुबह पांच बजे से मतगणना समाप्ति तक रूट डायवर्जन किया गया है। उतरौला से गोण्डा जाने वाले वाहन भगवतीगंज से न जाकर नहरबालागंज से फुलवरिया बाईपास होकर गोण्डा जाएंगे। वहीं गोण्डा से बलरामपुर शहर जाने वाले वाहन फुलवरिया बाईपास, नहरबालागंज से होते हुए भगवतीगंज चौराहा होकर जाएंगे। इसी तरह बलरामपुर से गोण्डा का रूट डायवर्जन भगवतीगंज, नहरबालागंज से होते हुए फुलवरिया बाईपास होकर गोण्डा किया गया है। चुनाव जीतने वाला प्रत्याशी व उनके समर्थक विजय जुलूस नहीं निकाल सकेंगे। इसके लिए प्रशासन ने कमर कस ली है। इसके लिए बाकायदा प्रत्याशियों को लिखित दलों के लोगों और उनके कार्यालयों की निगरानी कराई जाएगी। कोई भी व्यक्ति उत्तेजक बयानबाजी नहीं कर सकेगा। नियम का पालन न करने वालों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। मतगणना स्थल के बाहर भीड़ इकट्ठा नहीं होने दी जाएगी।

फांसी के फंदे पर लटक कर युवक ने दी जान

संवाददाता—श्रावस्ती। अज्ञात कारण से एक युवक ने कमरे में फांसी लगा ली। आहट पाकर पत्नी की आंख खुली तो फंदे पर पति की लाश लटक रही थी। शोर सुनकर छत पर लेटे परिजन जग गए और पुलिस को सूचित किया। पुलिस ने मौके पर पहुंच कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। भिनगा कोतवाली क्षेत्र के भिनगा नगर स्थित टंडवा रजानगर मोहल्ला निवासी गिरधारी लाल विश्वकर्मा (25) पुत्र जगदीश प्रसाद रविवार देर रात को खाना खाने के बाद कमरे में लेटा था। पत्नी के सो जाने के बाद आधी रात को गिरधारी उठा और किसी कारण से छत के कुंडे में फांसी का फंदा डालकर फांसी लगा ली। आहट पाकर पत्नी संगीता की आंख खुल गई तो गिरधारी को फंदे से लटका देखा। इस पर वह शोर मचाने लगी। शोर सुनकर मृतक के छत पर मौजूद चाचा दौड़ कर नीचे आ गए और पुरानी तहसील स्थित फर्नीचर की दुकान पर सोए पिता जगदीश को सूचित किया। सूचना मिलते ही जगदीश भागते हुए घर पहुंचे लेकिन तब तक गिरधारी की मौत हो गई।

रामबर चरगहा में पांच जून को होगा पौधरोपण

संवाददाता—कुशीनगर। 5 जून दिन बुधवार को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर नयी दिशा पर्यावरण सेवा संस्थान के तत्वावधान में कसया—रामकोला मार्ग पर स्थित रामबर चरगहा गांव के मनरेगा पार्क में प्रातः 8 बजे जन सहयोग से वृहद पौधरोपण किया जायेगा। इसकी तैयारी पदाधिकारियों ने साफ सफाई करके की है। सचिव डॉ. हरिओम मिश्र ने बताया कि रामबर चरगहा में निर्मित मनरेगा पार्क चहारदीवारी और गेट से सुरक्षित है। इससे लगने वाले पौधों को सुरक्षित रखने अधिक मेहनतर नहीं करना होगा। प्रधान वंदना देवी और उनके प्रतिनिधि सत्येंद्र सिंह ने लगने वाले पौधों के देखभाल और बचाने की जिम्मेदारी ली है।

आज वोटों की गिनती तय करेगी क्षत्रपों की सियासत का सफर

संवाददाता—संतकबीरनगर। जिले में लोकसभा चुनाव में वोटों की मतों की गणना के साथ ही सियासी क्षत्रपों के सियासत का भी खुलासा हो जाएगा। राजनीतिक गलियारों में सपा और भाजपा की ही अधिक चर्चा रही। मतगणना के साथ ही क्षत्रप होने का दम भरने वाले राजनेताओं की कूटनीतिक चाल के साथ ही कारस्तानी खुल कर सामने आ जाएगी। लोकसभा चुनाव में वोटों की गिनती का समय करीब आ गया है। जीत–हार को लेकर लोगों की धड़कनें बढ़ने लगी हैं। लोग अपने अपने तरीके से मिले मतों की समीक्षा कर रहे हैं। कार्यकर्ता से लेकर नेता तक की जुबान सिल उठी हैं। सपा और भाजपा के कई बड़े नेता तो मौन साध रखे हैं। संतकबीरनगर लोकसभा सीट में जिले की तीन विधानसभा सीटें हैं। तीनों में माहौल एक जैसा है। सपा को खोने के लिए कुछ बचा ही नहीं है। यदि वह जीत दर्ज करती है तो उसकी बड़ी उपलब्धि होगी। जीत–हार का मायने सिर्फ भाजपा के लिए है। जिले के तीनों विधानसभा में जीत हार की स्थिति आगामी विधानसभा चुनाव में राजनेताओं का भविष्य तय करेगी। लोकसभा चुनाव के दौरान कई नेताओं की तो मंच पर उपस्थिति महज रश्म अदायगी भर रही। मैदान में करिश्माई नेताओं का करिश्मा भी पूरी तरह से नहीं दिखा।

जनता ने मुझे अपनी तरफ से सांसद का सर्टिफिकेट दे दिया है —अवधेश प्रसाद

संवाददाता—अयोध्या। इंडी गठबंधन के कंडीडेट अवधेश प्रसाद ने कहा कि जनता ने इतना प्यार उन्हें पहली बार दिया है। मतगणना के पहले इंडिया गठबंधन के सपा प्रत्याशी अवधेश प्रसाद ने प्रेसवार्ता कर मीडिया के एग्जिट पोल पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि यह सरकारी एग्जिट पोल है। बहुत पहले ही एग्जिट पोल की पोल खुल चुकी है। जनता ने मुझे सांसद का सर्टिफिकेट दे दिया है।

मतगणना को लेकर ट्रैफिक पुलिस भी अलर्ट सख्ती से लागू होगा ट्रैफिक डायवर्जन

संवाददाता—गोरखपुर। मंगलवार 4 जून को मतगणना के दौरान परिसर के अंदर और बाहर भीड़ न हो इसको देखते हुए यातायात पुलिस ने रूट डायवर्जन किया है। मतगणना के दिन प्रत्याशी, मतगणना एजेंट और कर्मचारियों के लिए पार्किंग की अलग–अलग व्यवस्था की गई है।एसपी यातायात संजय कुमार ने बताया कि डायवर्जन का सख्ती से पालन कराया जाएगा। रविवार को मातहतों के साथ इसको लेकर बैठक करने के साथ ही भ्रमण कर डायवर्जन प्लान तैयार किया गया। गोरखपुर में मंगलवार 4 ध्जून को लोकसभा चुनाव की मतगणना को लेकर ट्रैफिक पुलिस ने रूट डायवर्जन जारी किया है। यह डायवर्जन कल यानी कि 4 जून की सुबह 6 बजे से मतगणना खत्म होने तक लागू रहेगा। इस दौरान गोरखपुर विश्वविद्यालय की तरफ कोई भी वाहन नहीं जाएंगे।मतगणना में लगे अधिकारी, कर्मचारी, एजेंट और सुरक्षाकर्मियों के वाहन पार्किंग की जगह भी तय कर दी गई है। इनकी गाड़ियां निर्धारित पार्किंग स्थल में खड़ी होंगी। गोरखपुर विश्वविद्यालय मुख्य गेट के सामने से गोरखपुर क्लब होते हुए आयकर भवन तिराहा तक सामान्य ट्रैफिक पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगी। पैडलेगंज से छात्रसंघ भवन चौराहा होकर रोडवेज तक जाने वाली बसें मतगणना होने तक मोहदीपुर चौराहा होकर रोडवेज बस डिपो जाएंगी। इसी प्रकार रोडवेज से छात्रसंघ भवन की ओर जाने वाली रोडवेज की बसें विश्वविद्यालय चौराहा से मोहद्दीपुर चौराहा होकर अपने गंतव्य की ओर जाएंगी। मोहदीपुर चौराहा से विश्वविद्यालय चौराहा तक आने वाले छोटे वाहन पांडेय पेट्रोल पंप से दाहिने मुड़कर जगदम्बा शक्तिपीठ तिराहा से रेलवे स्टेशन रोड होते हुए अपने गंतव्य को जाएंगे। विश्वविद्यालय से छात्रसंघ की तरफ जाने वाले दो/तीनध्चार पहिया और अन्य सभी प्रकार के वाहन डायवर्ट किए जाएंगे, ये वाहन विश्वविद्यालय चौराहा से मोहद्ददीपुर चौराहाध्पार्क रोड्ससिटी माल होकर अपने गंतव्य की ओर जाएंगे। मतगणना में लगे सभी कर्मचारीगण, पुलिस के कर्मचारीगण, पत्रकार मीडिया बंधु और अन्य सभी कर्मचारीगण के वाहन विश्वविद्यालय के गेट नंबर–2 (प्राचीन इतिहास गेट) से प्रवेश करेंगे। मतगणना कर्मचारी, पुलिस कर्मचारी, पत्रकार मीडिया बंधु और अन्य सभी कर्मचारीगण के दो पहिया वाहन प्राचीन इतिहास, गृह विज्ञान और ललित कला भवन विश्वविद्यालय में पार्क होंगे। जबकि, चार पहिया वाहन विश्वविद्यालय हेलीपैड ग्राउण्ड में पार्क होंगे। सभी प्रशासनिकध्पुलिस अधिकारी और अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण की गाड़ियां विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार से प्रवेश कर, विश्वविद्यालय हैलीपैड ग्राउण्ड पर पार्क होंगी। मतगणना ऐजेंट अपनी सभी प्रकार की गाड़ियां (दो पहियाध्चार पहिया) नेपाल क्लब मेंध्पुराना आरटीओ के पास पार्क करके विश्वविद्यालय मुख्य द्वार से मतगणना स्थल तक जाएंगे। प्रत्याशीगण के चार पहिया वाहन विश्वविद्यालय मुख्य द्वार के सामने पंत पार्क के सामने पार्क होंगे।

एक–दूसरे का साथ खूब भाया सीएम योगी और बच्चों को, खीर खिला नवजात का कराया अन्नप्राशन

संवाददाता—गोरखपुर। मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को लखनऊ रवाना होने से पहले प्रातःकाल गोरखनाथ मंदिर परिसर में नन्हे–मुन्ने बच्चों के साथ समय बिताया। सीएम योगी को बच्चों का और बच्चों को मुख्यमंत्री का साथ खूब भाया। मुख्यमंत्री काफी देर बच्चों से आत्मीय अंदाज में संवाद करते रहे और सभी को चॉकलेट और खूब आशीर्वाद दिया। उन्होंने एक बच्चे को खीर खिलाकर उसका अन्नप्राशन भी कराया।

सीएम योगी 31 मई से ही अनवरत गोरखनाथ मंदिर प्रवास कर रहे थे। सोमवार को वह दोपहर में लखनऊ रवाना हो गए। इसके पहले सोमवार प्रातःकाल उनकी दिनचर्या रोज की ही तरह रही। उन्होंने सबसे पहले गुरु गोरखनाथ का दर्शन पूजन किया। फिर अपने गुरुदेव ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की समाधि स्थल पर जाकर उन्हें नमन किया। मंदिर परिसर का भ्रमण करते हुए सीएम गोशाला पहुंचे और गोवंश को गुड़–रोटी खिलाकर उनकी सेवा की। मंदिर परिसर में भ्रमण के दौरान ही मुख्यमंत्री की नजर परिजनों के साथ आए बच्चों पर पड़ी तो उन्होंने सबको अपने पास बुला लिया। सभी बच्चों से उनका नाम पूछा, कहां से आए हैं और किस क्लास में पढ़ते हैं, इसकी जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने बच्चों से बेहद आत्मीय तरीके से संवाद करने के साथ उनसे हंसी ठिठोली भी की। सबके माथे पर हाथ फेरकर प्यार–दुलार और आशीर्वाद दिया कि खूब मन लगाकर पढ़ो और खूब आगे बढ़ो। बच्चों को विदा करते वक्त वह हमेशा की तरह चॉकलेट गिफ्ट करना नहीं भूले। इसी क्रम में मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने सोमवार सुबह महानगर के बिछिया जंगल तुलसीराम निवासी और केंद्रीय विद्यालय के शिक्षक दंपति मणिहर्ष–कंचन के साढ़े पांच माह के बालक राघव उर्फ सम्राट को खीर खिलाकर अन्नप्राशन कराया। सीएम योगी ने बच्चे को आशीर्वाद देने के साथ ही चॉकलेट और खिलौनों का उपहार भी दिया।

बौद्धिक एवं चरित्र निर्माण शिविर सर्वांगीण विकास का मुख्य साधन

संवाददाता—संतकबीरनगर। जिले में सर्वदेशिक आर्य वीर दल के तत्वाधान में आठ दिवसीय शारीरिक बौद्धिक एवं चरित्र निर्माण शिविर का भव्य उद्घाटन ज्ञान सरोवर विद्या मंदिर मोहदीनपुर में किया गया। यह शिविर नौ जून तक अनवरत रूप से चलेगा। इस अवसर पर ब्रह्मचारी अमित जौनपुर के द्वारा देव यज्ञ एवं विद्यालय के प्रबंधक अशोक मौर्य शास्त्री के द्वारा ध्वजारोहण कर शिविर का शुभारंभ किया गया। उन्होंने कहा कि यह शिविर सर्वांगीण विकास का मुख्य साधन है तथा संस्कारों के साथ वीरत्व की भावना उत्पन्न करता है। शिविर के मुख्य संरक्षक ओम प्रकाश आर्य ने कहा कि हम अधिकाधिक धन खर्च कर अपने बच्चों को ऊंची शिक्षा तो उपलब्ध करा रहे हैं, किंतु चरित्र के निर्माण के लिए जिन संस्कारों की आवश्यकता है वह इस शिविर के माध्यम से ही प्राप्त होती है। दिल्ली से आए प्रशिक्षक सत्यप्रिय, बस्ती से राहुल आर्य, राम तनय, सर्वांग सुंदर ने व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, जूडो, कैरातेम्पलेट, लाठी, नानचक, आसन, प्राणायाम डंबल, परंपरागत खेल आदि का प्रशिक्षण दिया। साथ ही साथ आत्मरक्षा की विद्या भी बच्चों को दी। सनातन संस्कृति से संबंधित सामान्य ज्ञान एवं विषय विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों पर बौद्धिक कक्षाएं भी संचालित होंगी। शिविर अध्यक्ष श्याम कुमार बरनवाल ने कहा कि ऐसे शिविर से संस्कारवान एवं प्रतिभावान एवं चरित्रवान युवाओं का निर्माण होता है और चरित्र निर्माण से ही राष्ट्र निर्माण संभव है। इस अवसर पर विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रवेश चंद्र यादव ने सभी प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया।

महिला से मारपीट करने पर ससुराल वालों पर केस

संवाददाता—गोरखपुर। इलाके के नदुआ लालपुर टीकर गांव में महिला से मारपीट करने पर पुलिस ने ससुर हरिश्चंद्र, देवर परमेश्वर, संगम, शुभम और उसकी पत्नी सोनी पर मारपीट, धमकी देने और गंभीर रूप से घायल करने की धारा में केस दर्ज किया है। पीड़ित अनीता देवी ने बताया कि ससुराल वालों से तंग आकर सिक्टौर चौराहे पर किराये का कमरा लेकर पति व बच्चों के साथ रहती है। अपने बच्चों व पति संजय के साथ मतदान के दिन अपने गांव पर वोट डालने गई थी कि उसी दौरान ससुर हरिश्चंद्र बिना किसी वजह के गाली देने लगा। विरोध करने पर आरोपियों ने मारपीट की। पुलिस केस दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

बंटवारे से मना करने पर भतीजे का सिर फोड़ भाभी और नाती का पैर तोड़ा

संवाददाता—गोरखपुर। गुलरिहा क्षेत्र के जंगल अयोध्या प्रसाद में रविवार को रातों रात जमीन बंटवारा करने की जिद में एक भाई अपने रिश्तेदारों के साथ मिलकर भतीजे का सिर फोड़कर अधमरा कर दिया। भाभी और नाती का पैर तोड़ दिया। घायल की तहरीर पर गुलरिहा पुलिस केस दर्ज कर मामले की जांच में जुटी है।

जानकारी के मुताबिक क्षेत्र के जंगल अयोध्या प्रसाद टोला मलमलिया निवासी सुरेश के बाबा कतवारु कि 26 दिन पहले मृत्यु हो गयी थी। 27 मई को ब्रह्मभोज में कतवारु के चारों बेटे इकट्ठा हुए थे। कार्यक्रम बीतने के बाद बड़ा बेटा रामप्रीत बाहर चला गया। रविवार की रात लगभग साढ़े नौ बजे के करीब चाचा रामदरश रात में ही जमीन का बंटवारा करने का जिद करने लगा। छोटे भाई रामअशीषे ने सुबह बात करने को कहा तो भड़ककर रामअशीष को मारने–पीटने लगा।

शोर सुनकर भतीजा सुरेश पहुंचा तो रामदरश अपने बेटे नीरज और घर में पहले से मौजूद पांच अज्ञात रिश्तेदारों को बुला लिया। सभी मिलकर सुरेश को पीटते हुए खेत में ले गए। ईंट से वार कर उसका सिर फोड़ दिया। आवाज सुनकर सुभाष और भाभी सोमारी देवी बीच–बचाव करने पहुंचे तो आरोपी ने भाभी सोमारी देवी और सुभाष के दस वर्षीय बेटे शिवम का पैर तोड़ दिया। घायल सुरेश को मरा समझकर हमलावर फरार हो गए।

दुकानदार की पिटाई से घायल एक की हालत बिगड़ी, मेडिकल कॉलेज रेफर

संवाददाता—गोरखपुर। गोला बाजार के चन्द चौराहे पर इलेक्ट्रॉनिक की दुकान पर रुपये के लेनदेन के विवाद में रविवार को हुई मारपीट में घायल चंद्रभान की हालत रविवार की रात बिगड़ गई। परिजन स्वास्थ्य केंद्र से जिला अस्पताल और फिर वहां से मेडिकल कॉलेज लेकर चले गए। उधर, पुलिस ने चंद्रभान की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है। जानकारी के मुताबिक, वार्ड नंबर 14 निवासी चंद्रभान गौंड के पुत्र शिवधारी ने 29 मई को चन्द चौराहे पर स्थित जावेद की इलेक्ट्रानिक की दुकान से कुछ सामान लिया था। उस दिन 150 रुपये को लेकर हुए विवाद में एक बार फिर रविवार को विवाद हो गया। आरोप है कि चंद्रभान और उसके बेटे शिवधानी को दुकानदार ने कर्मचारियों के साथ मिलकर पीट दिया था। इलाज के बाद सभी घर आ गए थे लेकिन रविवार की रात में अचानक तबीयत खराब होने पर चंद्रभान को मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। पुलिस ग्राहक से मारपीट के मामले में दुकान मालिक जावेद, साहबान, गोलू, समसाद, इशाद, शाहिल, कैफ निवासी वार्ड नंबर 6 नगर पंचायत गोला व एक अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर तलाश कर रही है।

प्रचंड गर्मी में धान की जरई डालने से परहेज कर रहे किसान

संवाददाता—संतकबीरनगर। जिले में चिलचिलाती धूप व प्रचंड गर्मी में किसानों के हौसले पस्त नजर आ रहे हैं। धान के नर्सरी तैयार करने व जरई डालने का समय होने के बावजूद किसान इससे कतराते नजर आ रहे हैं। इसका प्रमुख कारण किसान मौसम की मार तथा बढ़ने वाले खर्च को बता रहे हैं। जून का महीना शुरू हो गया है। लेकिन क्षेत्र के अधिकांश किसान धान की जरई डालने से परहेज कर रहे है। मई महीने में बिल्कुल बरसात न होने से सख्त हो चुके खेतों की अभी तक किसान जुताई भी नहीं करा पाए हैं। किसान धान का बीज भी खरीद लिए है। लेकिन तल्ख मौसम के चलते नर्सरी बनाने में बढ़ते खर्च की चिंता उन्हें जरई न डालने के लिए मजबूर कर रहा है। इक्का–दुक्का किसानों ने जरई डाला भी तो चौबीस घंटे बाद ही उन्हें पानी चलाने को मजबूर होना पड़ रहा है। किसान द्वारिका, श्रीराम, विश्वविजय सिंह, रामअवध यादव, पन्ना मिस्त्री आदि ने कहा कि मौसम की मार से धान की रोपाई पिछड़ने का खतरा मंडराने लगा। धान के जरई डालने का समय शुरू हो गया है। लेकिन तेज धूप में बीज से पौधा न निकलने के मंडरा रहे खतरे से हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं। खेतों में नमी पूरी तरह से समाप्त हो गई है। नर्सरी के जल्द–जल्द सूखने से प्रतिदिन पानी चलाना पड़ेगा। जिससे डीजल का खर्च काफी बढ़ जाएगा।

सुबह पांच बजे शुरू हो जाएगी मतगणना की प्रक्रिया, पूरी योजना तैयार

संवाददाता—अयोध्या। अयोध्या में वैसे तो वोटों की गिनती जीआईसी में निर्धारित समय सुबह आठ बजे से शुरू होगी लेकिन इसकी प्रक्रिया पांच बजे ही प्रारंभ हो जाएगी। सबसे पहले भारत निर्वाचन आयोग के दोनों प्रेक्षकों पी आकाश और साहिन अली खान की मौजूदगी में मतगणना कार्मिकों का तीसरा और अंतिम रेंडमाइजेशन होगा। इसी समय कार्मिकों को यह जानकारी दी जाएगी कि उनकी मतगणना टेबल कौन सी होगी। इसके बाद सुबह छह बजे सभी कार्मिक और एआरओ मतगणना स्थल जीआईसी पहुंच जाएंगे। सीडीओ ऋषिराज ने बताया कि इसी समय स्ट्रांग रूम खुल जाएगा और ईवीएम को टेबलों पर पहुंचाने का काम शुरू होगा। मतगणना शुरू होने के ठीक पहले तक जितने भी पोस्टल मतपत्र आएंगे, उन सभी की गिनती की जाएगी।

जीआईसी में मतगणना शुरू होने के करीब डेढ़ घंटे पहले प्रत्याशियों या उनके एजेंटों की मौजूदगी में स्ट्रांग रूम का ताला खोला जाएगा। इस दौरान निर्वाचन अधिकारी और चुनाव आयोग के प्रेक्षक भी मौजूद रहेंगे। इस पूरी प्रक्रिया की वीडियोग्राफी कराई जाएगी। इसके बाद ईवीएम की कंट्रोल यूनिट मतगणना टेबल पर लाई जाएगी। टेबल पर रखने के बाद प्रत्येक कंट्रोल यूनिट की यूनिक आईडी और सील का मिलान किया जाएगा। इसे हर उम्मीदवार के पोलिंग एजेंट को दिखाया जाएगा। इसके बाद कंट्रोल यूनिट में बटन दबाने के बाद हर उम्मीदवार का वोट ईवीएम में उसके नाम के आगे दिखने लगेगा।

करीब चार सौ मतगणना कार्मिकों को विधानसभा क्षेत्र का आवंटन कर दिया गया। इनमें फैजाबाद लोकसभा क्षेत्र के चार विधानसभा क्षेत्र रुदौली, बीकापुर, मिल्कीपुर व अयोध्या और अंबेडकरनगर का गोसाईगंज विधानसभा क्षेत्र शामिल है। जिला निर्वाचन अधिकारी नितीश कुमार की मौजूदगी में विकास भवन में एनआईसी के वीडियो कांफ्रेंसिंग कक्ष में मतगणना कार्मिकों का दूसरा रेंडमाइजेशन किया गया। इस दौरान अयोध्या, मिल्कीपुर व रुदौली के मतगणना प्रेक्षक पी आकाश और विधानसभा क्षेत्र बीकापुर व गोसाईगंज के मतगणना प्रेक्षक साहिन अली खान के साथ मुख्य विकास अधिकारी व प्रभारी अधिकारी मतगणना कार्मिक ऋषिराज, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट स्वाति शर्मा व डीआईओ एनआईसी मौजूद रहे। जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि सभी मतगणना कार्मिकों को विधानसभा क्षेत्र का आवंटन कर दिया गया है। मतगणना टेबल का आवंटन मंगलवार सुबह होगा। सभी कार्मिकों के मतगणना स्थल पर प्रवेश का मार्ग भी तय कर दिया गया है। इसी तरह प्रत्याशियों के पोलिंग एजेंटों को मुख्य द्वार से प्रवेश दिया जाएगा। मीडिया कर्मी भी यहीं से मतगणना स्थल में प्रवेश करेंगे। इन सभी को जिला प्रशासन की ओर से जारी पास दिखाने पर ही प्रवेश मिल सकेगा।

राम मंदिर के दूसरे तल पर हो रहा राम दरबार का निर्माण, संगमरमर की होंगी मूर्तियां

संवाददाता—अयोध्या। राम मंदिर निर्माण समिति की बैठक में शामिल होने के लिए चेयरमैन नृपेंद्र मिश्र अयोध्या पहुंचे हैं। उन्होंने बताया कि राम मंदिर के दूसरे तल पर बनने वाले राम दरबार की मूर्ति संगमरमर की होगी। मंदिर परिसर में बन रहे सप्त मंदिर का निर्माण अक्तूबर में पूरा हो जाएगा। शेषावतार मंदिर की आधारशिला बदली जाएगी। 25 वर्ष पुरानी आधारशिला को हटाकर नई आधारशिला रखी जाएगी। राम मंदिर परिसर में ऑडिटोरियम के निर्माण के लिए जुलाई के प्रथम सप्ताह में फाउंडेशन का कार्य प्रारंभ कर दिया जाएगा। ऑडिटोरियम का कार्य 12 महीने में पूर्ण कर लिया जाएगा।

राम मंदिर परिसर में ही म्यूजियम बनेगा। म्यूजियम में रामायण कालीन वस्तुएं रखी जाएंगी। खुदाई में मिली वस्तुएं भी यहां पर रखी जाएंगी। 500 वर्षों का ही नहीं, 500 वर्षों से अधिक राम मंदिर के इतिहास को प्रदर्शित किया जाएगा।

गांव में बारात से घर पहुंचे युवक की हत्या

संवाददाता—अम्बेडकरनगर। बारात में नाचने गाने के दौरान उपजे विवाद के बाद घर पहुंचने पर गांव के ही तीन लोगों ने मिलकर एक व्यक्ति के ऊपर बांस से हमला कर मौत के घाट उतार दिया। जिससे पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गयी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। दोनों पक्षों का एक ही जगह घर होने के चलते मौके पर एहतियातन पुलिस बल तैनात किया गया है। मामला हंसवर थाना क्षेत्र के सैदपुर लेडुवाडीह गांव के दलित बस्ती का मामला है। सैदपुर लेडुवाडीह से बीते रविवार को रामगति के पुत्र धीरज कुमार की बारात करौदी लाला जहांगीरगंज गई हुई थी। बताया जाता है कि द्वार पूजा के दौरान नाचने गाने को लेकर बाराती आपस में ही भिड़ गए थे। हालांकि स्थानीय लोगों के बीच बचाव पर मामला शांत हुआ। तत्पश्चात सुनील कुमार (35) पुत्र दयाराम देर रात को घर वापस आ गये। सुनील कुमार घर वापस आने के बाद अपने परिजनों के साथ अपने घर के दरवाजे पर चारपाई पर अबोध बच्ची के साथ गहरी नींद में सो रहे थे कि अचानक लगभग एक बजे रात को इस विवाद को लेकर गांव के ही घनश्याम पुत्र स्वर्गीय बहादुर, दिलीप पुत्र राजेश व अंबेश पुत्र रामसहाय ने घर के पीछे से सुनील के दरवाजे पर पहुंच गये तथा चारपाई पर सो रहे सुनील कुमार पर ताबड़तोड़ हमला बोल दिया। हमले की आवाज से अन्य परिजन भी जग गये तथा हल्ला गुहार पर तीनों हमलावर मौके से भाग खड़े हुए। हमले मे सुनील कुमार पूरी तरह से लहूलुहान हो गये जबकि सो रही बच्ची 6 साल की बेटी प्रतीक्षा सुरक्षित बच गई। घायल सुनील कुमार की मौके पर ही मौत हो गयी। मौत की जानकारी होते ही परिजनों में कोहराम मच गया। परिजनों ने तत्काल पुलिस को सूचना दिया। सूचना पर थानाध्यक्ष सुनील कुमार पांडेय पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचकर उच्च अधिकारियों को सूचना देकर थानाध्यक्ष ने शव को कब्जे में लेकर मृतक के भाई अनिल कुमार के प्रार्थना पत्र पर तीनों आरोपियों के खिलाफ हत्या के आरोप में मुकदमा पंजीकृत कर शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। एसपी विशाल पांडेय व सीओ टांडा शुभम कुमार ने घटनास्थल का निरीक्षण कर परिजनों को ढांढस बंधाया तथा मातहतों को तत्काल गिरफ्तारी के लिए निर्देशित किया।

मुकदमा पंजीकृत करने के बाद से ही हंसवर पुलिस ने आरोपियों को खोजबीन करने के लिए संभावित जगहों पर दबिश देना शुरू किया तथा महज घटना के चार घंटे के भीतर ही थानाध्यक्ष सुनील कुमार पांडेय ने तीनों आरोपियों घनश्याम, दिलीप व अंबेश को मुखबिर की सूचना पर गिरफ्तार कर लिया। इस संबंध में अपर पुलिस अधीक्षक विशाल पांडेय ने बताया कि मामले में मुकदमा पंजीकृत कर आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। तीनों आरोपियों को न्यायालय भेजकर रिमांड की मांग की जायेगी।

देर शाम को पोस्टमार्टम के बाद सुनील का शव घर पहुंचते ही एक बार फिर परिजनों में हाहाकार मच गया। सभी लोग दहाड़ मारकर रोने लगे। मृतक की पत्नी बार बार रोते हुए बेहोश हो रही थी तो अन्य परिजन पानी के छींटें मारकर संभाल रहे थे। इकलौती 6 वर्षीय पुत्री शांत आंखों में आंसू लिए अपने पिता के शव को निहार रही थी। उसको देखते हुए मौके पर मौजूद सभी लोग भावुक हो रहे थे। कुछ देर बाद परिजनों ने शव का अंतिम संस्कार कर दिया।

आठवें वेतन आयोग का गठन करे भारत सरकार

संवाददाता—संतकबीरनगर। जिले में माध्यमिक शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष चेत नारायण सिंह व प्रदेश मंत्री संजय द्विवेदी ने कहा कि भारत सरकार कर्मचारी हितों की रक्षा के लिए आठवें वेतन आयोग का गठन करे। देश में पुरानी पेंशन योजना को पुनः लागू किया जाय। समझौते के मुताबिक राज्य सरकार भी केंद्र सरकार की कर्मचारियों के संदर्भ में की गई घोषणाओं को उत्तर प्रदेश में यथावत लागू करे किंतु राज्य सरकार इस समझौते का पालन नहीं कर रही है। शिक्षक नेताओं ने उक्त बातें प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से कही है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने महंगाई भत्ता (डीए) 50: तक पहुंचने के बाद केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए ग्रेच्युटी सीमा बढ़ा दी है। 1 जनवरी, 2024 से सेवानिवृत्ति ग्रेच्युटी और मृत्यु ग्रेच्युटी की अधिकतम सीमा 25: बढ़ाकर 20 लाख रुपये से 25 लाख रुपये कर दी गई है किंतु राज्य सरकार ने उत्तर प्रदेश के कर्मचारियों के लिए इसकी घोषणा अभी तक नहीं की। केंद्र सरकार ने अपने कर्मचारियों का आवासीय भत्ता भी 10, 15 व 25 प्रतिशत तक बढ़ा दिया किंतु उत्तर प्रदेश सरकार ने अपने कर्मचारियों के लिए कुछ भी नहीं किया। उन्होंने कहा कि केंद्र व अनेक राज्य सरकारों ने 1 अप्रैल 2005 के पूर्व विज्ञापित पदों पर बाद में नियुक्ति पाए कर्मचारियों को पुरानी पेंशन का लाभ देने के लिए सहमति दे दी है किंतु उत्तर प्रदेश इस संदर्भ में अभी तक कोई निर्णय नहीं ले पा रहा है जिससे आक्रोश बढ़ता जा रहा है। एनपीएस ने राज्य कर्मचारियों का भविष्य अंधकार मय कर दिया है, इसे तुरंत बंद किया जाना चाहिए। एनपीएस घोटाले की जांच के लिए गठित एसआईटी रिपोर्ट को प्रदेश सरकार दबा रही है। एनपीएस कटौती का रुपया कहां जा रहा है कर्मचारियों को पता नहीं चल पा रहा है। राज्य सरकार एनपीएस का राज्यांश बजट समय से देने में असफल है, जिससे आक्रोश बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि 10, 11 व 12 जून को मुजफ्फरनगर में आयोजित ग्रीष्मकालीन शिविर में प्रदेश भर के शिक्षकों का संगम हो रहा है। इसी सम्मेलन में उक्त मुद्दों पर विस्तार से मंथन होगा और भविष्य में आंदोलन की रूपरेखा तय की जाएगी। उन्होंने अपील किया है कि प्रदेश के सभी 18 मंडलों के अध्यक्ष, मंत्री व 75 जनपदों के जिलाध्यक्ष, मंत्री मुजफ्फरनगर के सम्मेलन में अपने टीम के साथ जरूर प्रतिभाग करें।

अदालती नोटिस

जो0क0 आकार पत्र 6–क [(नियम–26 (3)]

नोटिस

[धारा –48 क (2) के अधीन]

पुस्तक संख्या. नियम 109 कम संख्या.

....

वाद संख्या–202354176500000373

न्यायालय– डी0डी0सी0 महोदय संतकबीरनगर

मुधु श्रीवास्तव आदि

बनाम

सरकार आदि

1. अनिल कुमार पुत्र नरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव साकिन मौजा विन्धयवासनीनगर मकान नं0–34 जनपद गोरखपुर

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि मेरे सामने भूमि के सम्बन्ध में अधिकार और दायित्व संयुक्त दोनों का विभाजन और गाटों, पेड़ो, कूंओ तथा अन्य समुन्नितयों के मूल्य का अवधारण करने के लिये एक वाद रजिस्टर तैयार किया गया है। आपको एतद् द्वारा आदेश दिया जाता है कि डी0डी0सी0 महोदय संतकबीरनगर में दिनांक– 06.06. 2024 को 10 बजे पूर्वान्ह में स्वयं या यथावत अधिकृत अभिकर्ता द्वारा उपस्थित हो। यदि आप उपस्थित न होंगे तो विवाद आपकी अनुपस्थिति में निर्णीत कर दिया जायेगा।

मेरे हस्ताक्षर और कार्यालय के मुहर से दिनांक 16.05.2024 को जारी किया गया।

चकबन्दी अधिकारी

सहायक चकबन्दी अधिकारी

मण्डल (सर्किल)....

अदालती नोटिस

इत्तिलानामा बनाम रेपान्डेन्ट बावत इत्तिला तारीख मुकर्ररह समायत अपील

वाद सं0 C 202117000000498

अदालत– श्रीमान अपर आयुक्त बस्ती मण्डल बस्ती जिला–बस्ती

राम प्रकाश पाण्डेय

बनाम

रामकृपाल आदि

1. रामकृपाल पुत्र महेश 2. राजेन्द्र 3. सुरेन्द्र 4. वीरेन्द्र 5. रविन्द्र 6. नरेन्द्र पुत्रगण रामसेवक 7. मिट्ठू लाल पुत्र उदयराज साकिनान कांटेखेरा तप्पा छपिया परगना रसूलपुर तहसील भानपुर जिला–बस्ती

तारीख पेशी 09–07–2024

अपील बनराजी अदालत मुकाम बस्ती

मयरिखा महीना सन् 20 ई0 रेस्पान्डेन्टस

इत्तिला दी जाती है कि अपील बनराजी डिगरी इस मुकदमें में मुसम्मी ने पेश इस अदालत में दर्ज रजिस्टर हुआ और इस अदालत व तारीख 09 महीना 07 सन 2024 ई0 वास्ते जमानत तथा अपील मुकर्रर का है।

अगर खुद या आपके वकील या और शख्स जो कानूनन आपकी तरफ से अपील हाजा में जबाब सवाल करने वाजिद हो हाजिर न आयेगा तो उसकी समायत और तजबीज आपकी गैर हाजिरी में एकतरफा हो जायेगी। आज बतारीख 03 माह 06 सन 2024 ई. मेरे दस्तखत और मुहर अदालत के हवाले किया गया।

द0 हाकिम

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक–दिनेश सिंह

संयुक्त सम्पादक–प्रदीप चन्द्र पाण्डेय

अयोध्या–फैजाबाद कार्यालय– चर्तुभुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या–फैजाबाद

लखनऊ कार्यालय– आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।

गोरखपुर कार्यालय– इलाहीबाग गोरखपुर।

मो09450567450 9336715406,

ई.मेलbhartiyabasti@yahoo.com bhartiyabasti@gmail.com